जून (प्रथम) 2021 | ₹30.00

चंपक

D

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

अरे पेटू जी, आपने क्युँ तकलीफ करी आने की, बस थोडी सी दिक्कत रह गयी है खाने की। कोविड तो चला गया, पेट की समस्या छोड गया।

पेटू जी और कोविड मरीज

इसलिए तो हम आये हैं साथ में फल और स्टोमाफिट लाये हैं। ताजे फल रखेंगे शरीर को स्वस्थ, अपच और पेट की समस्या दूर करने में स्टोमाफिट है मस्त, मस्त, मस्त।

New Pack

अपच व एसीडिटी से तुरंत आराम

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

COVISAFE

Rinse-Free & Non-Sticky

मारे 99.9% वायरस व किटाणु बिना पानी के

जब हम दूषित हाथों से अपना मुँह, आँख या नाक छूते हैं तो वायरस आसानी से हमारे शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसलिए आपको बार-बार हाथ धोना या सेनिटाइज करना चाहिये।

सुरक्षा कोम्बो

बाहर से सुरक्षित + अंदर से स्वस्थ

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

New Pack

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वादिष्ट

भूख न लगना, गर्भावस्था में खून की कमी, मासिक धर्म, साधारण कमजोरी, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट तथा कोविड-19 से आई कमजोरी को दूर करने में सहायक

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्केन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपल्बध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्केन करें

चंपक

जून (प्रथम) 2021 अंक : 1214

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

चीकू की सवारी	4
विश्व साइकिल दिवस	10
दूसरे ग्रह का हीरो	15
विक्की की गलतफहमी	20
एलियनों की गुप्त यात्रा	26
लंबी पूंछ	34
मैं भी बनूंगा पुलिस इंस्पैक्टर	46

मुखपृष्ठ

जब आप एलियन के बारे में सोचते हो तो सब से पहली बात आप के मन में क्या आती है? एक ऐसी दुनिया जो आश्चर्य, उत्सुकता और ऐडवेंचर से भरी हुई है. हम भी ऐसी कहानियां पढ़ना पसंद करते हैं और आशा है कि तुम्हें भी पसंद आएगी.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	7
देखो हंस न देना	8
संख्या बताएं	13
बताओ तो जानें	14
बिंदु मिलाओ	30
कौन सी किताब नहीं पढ़ी	31
चित्र पूरा करें	32
स्मार्ट	33
जय की मदद करें	39
अंतर बताओ	40
याददाश्त बढ़ाएं	41

चित्र कथाएं

डमरू और सेलिना लोमड़ी	9
चीकू	24
दादाजी और विश्व साइकिल दिवस	42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	19
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

चीकू की सवारी

कहानी ● पूनम मेहता

चीकू खरगोश की स्कूल बस आज फिर छूट गई थी. जल्दी करतेकरते भी पता नहीं कैसे वह रोज स्कूल को लेट हो जाता था. मम्मीपापा को भी क्या कहता? निराश हो कर उस ने स्कूल बैग बिस्तर पर रखा और अपने कमरे में बैठ गया.

पिछले महीने से वह रोज लेट हो रहा था. वह टाइम मैनेजमैंट पढ़ रहा था, पर उसे लागू नहीं कर पा रहा था. स्कूल से इसी हफ्ते यह उस की दूसरी छुट्टी थी. मम्मीपापा की नाराजगी, स्कूल में अटैंडेंस का चक्कर और दोस्तों का मजाक चीकू को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे.

चीकू दुविधा में था कि उस का फोन घनघना उठा. लाइन पर उस का दोस्त मीकू माउस था. मीकू ने चीकू को तुरंत बाहर आने को कहा. चीकू ने दरवाजा खोला और देखा कि मीकू कार में खड़ा उस का इंतजार कर रहा था. दोनों स्कूल के लिए एकसाथ कार में रवाना हुए.

चीकू 7वीं कक्षा में था. वह पढ़ाई और खेलकूद दोनों में अच्छा था पर काम को कल पर टालने की उसे बुरी आदत थी. इस आदत के चलते उस के काम की योजनाएं पूरी नहीं हो पाती थीं और फिर तनाव में आगे के भी काम बिगड़ते थे.

उस के मम्मीपापा, दोस्त और शिक्षक सभी उसे समझाते, लेकिन हर बार चीकू वादा भी करता पर कहीं न कहीं चूक हो ही जाती. दिन की शुरुआत में टाइमटेबल बिगड़ जाता तो फिर

दिन भर सोचे अनुसार कुछ न होता.

चीकू को समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे अपनी दिनचर्या ठीक करे.

एक दिन उस के पापा ने सुझाव दिया कि वह अपने स्कूल साइकिल से जाए.

हमेशा उसकी चिंता करने वाले पापा जो उसे कहीं जाने नहीं देते थे, उन से ऐसे प्रस्ताव की अपेक्षा चीकू को कतई नहीं थी. उस के पास रेसिंग साइकिल थी, चीकू को बात जंच गई. कुछ दिन पहले ही उस की बूआ ने वह साइकिल उसे जन्मदिन पर दी थी.

चीकू ने साइकिल से स्कूल जाने का मन बना लिया. अगली सुबह जब अलार्म बजा तो उस ने चिड़चिड़ा कर उसे औफ कर दिया और सो गया. कुछ देर बाद जब मां ने आ कर उस याद दिलाया कि आज स्कूल बस से नहीं, साइकिल से जाना है, इसलिए जल्दी निकलना पड़ेगा, तो चीकू उठ गया.

वह फ्रैश हुआ, कपड़े पहने और नाश्ता किया. घर के आसपास से रिक्शा, बस, टैंपो सब निकलने लगे थे. चीकू ने साइकिल उठाई और पैडल मार कर चला गया.

साइकिल चलाने में उसे थोड़ी शर्म आ रही थी, पर रास्ते में उस के कुछ दोस्त मिले, तो उस का आनंद दोगुना हो गया और फिर भी आज चीकू को स्कूल पहुंचने में देर हो गई. प्रिंसिपल ने पहली बार साइकिल से आने के कारण उसे माफ कर दिया, पर आइंदा के लिए चेतावनी भी दे दी.

चीकू को एहसास हो गया था कि स्कूल समय पर पहुंचने के लिए उसे घर से थोड़ा पहले निकलना पड़ेगा. अगले दिन सुबह वह थोड़ा जल्दी उठा. तैयार हुआ और निकल पड़ा. जल्दी उठने से उस के पास काफी समय था. उस ने नाश्ता भी ठीक से किया. साइकिल चलाते समय ठंडी हवा उस के गालों को छू कर निकल रही थी. उसे आसपास से आती जंगली फूलों की खुशबू महसूस हुई. उस ने गहरी सांस ली.

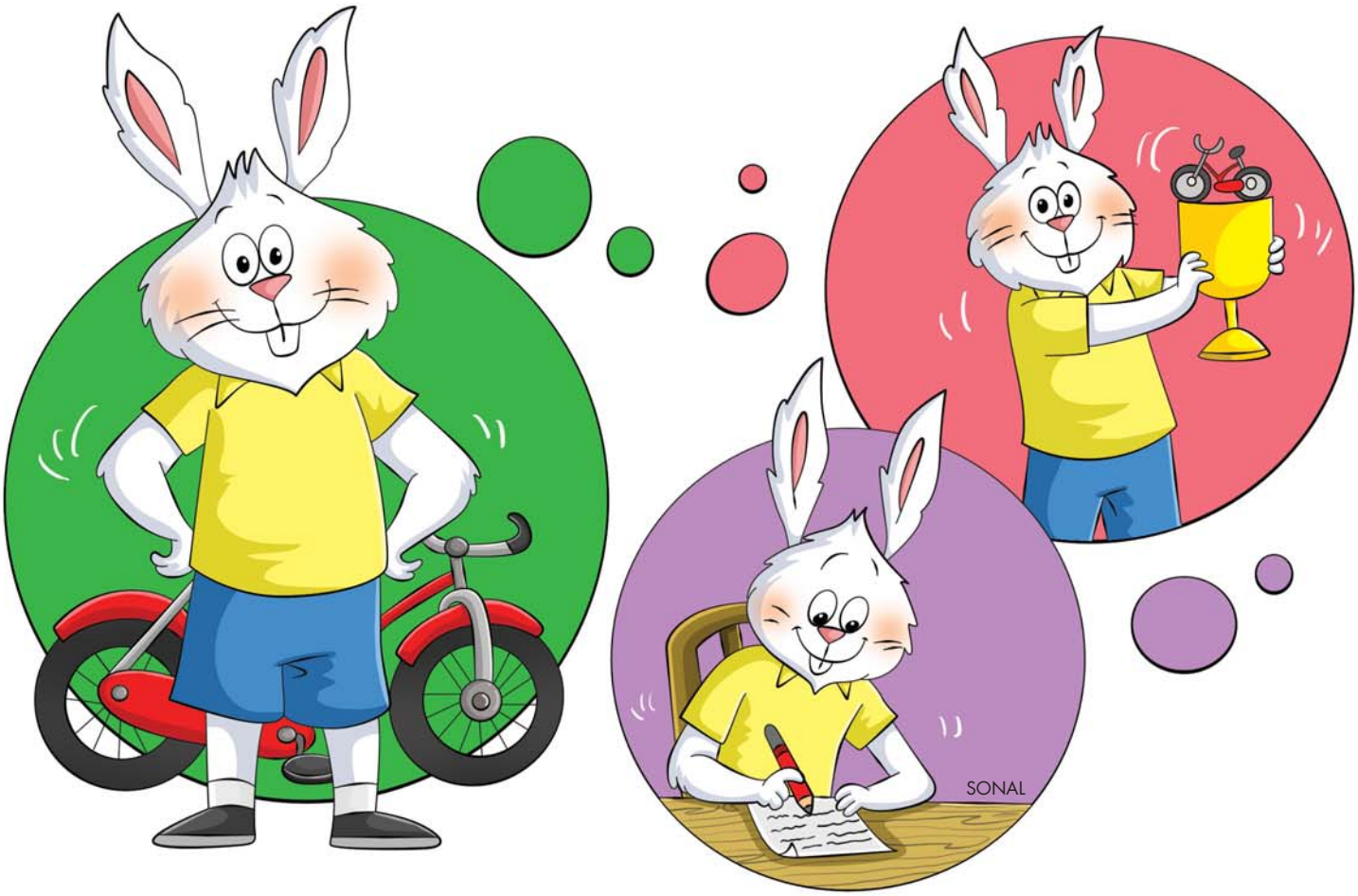

आसमान में उसे पक्षियों का एक झुंड दिखा. स्कूल बस, टैंपो, औटो और कारों से जाते अन्य बच्चे दिखे. सभी से उस ने मुसकरा कर अभिवादन किया. उस ने खुद को उत्साहित और ऊर्जावान महसूस किया.

धीरेधीरे साइकिल चलाना उस की आदत बन गई. साइकिलिंग से न केवल उस की लंबाई बढ़ने लगी, बल्कि उस का स्टैमिना भी बढ़ गया. वह स्कूल में होने वाली साइकिल रेस में हिस्सा लेने की सोचने लगा.

कक्षा में एक दिन जब टीचर ने संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा हर साल 3 जून को मनाए जाने वाले विश्व साइकिलिंग दिवस के बारे में जानकारी दी तो चीकू को एहसास हुआ कि बढ़ते प्रदूषण को घटाने में उस की साइकिल की भी भूमिका रही है. यदि वह आलस करता या फिर स्कूटर या बाइक से स्कूल आता तो स्वास्थ्य लाभ जो उसे हुआ था, नहीं हो पता.

उस ने महसूस किया कि अपने आलस के कारण वह अब तक सभी चीजों से दूर रहा. खेलों में वह अच्छा कर सकता था. पढ़ाई भी अच्छी कर लेता पर आलस्य के कारण और टालने की आदत से वह एक औसत विद्यार्थी ही रहा.

इंटरस्कूल साइकिल रेस के लिए जब क्लास टीचर ने उस का नाम सुझाया तो सभी बच्चों ने ताली बजा कर स्वागत किया. चीकू को अपना खोया आत्मविश्वास वापस मिल गया. वह न केवल खेलों में बल्कि पढ़ाई में भी अब सुधार करने लगा था.

जल्दी ही चीकू ने कड़ी मेहनत कर के न केवल साइकिल रेस में स्कूल को जीत दिलाई, बल्कि पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन कर सब को चौंका दिया. समय का सही तरह से उपयोग कर के, एक औसत विद्यार्थी जिस ने अपनी गलती से सीख ले कर उसे सुधारा था. अब स्कूल का हीरो बन चुका था. ●

सुंदर रंग भरो

देखो हंस न देना

सैम (रिया से) : मैं इंग्लिश बहुत तेज बोल सकता हूं.
रिया : अच्छा, कितना तेज?
सैम : इंग्लिश, इंग्लिश, इंग्लिश.

अनिक सिंह, 10 वर्ष, नई दिल्ली

चिंटू (मोंटू से) : मधुमक्खियों के स्टिकी हेयर यानी चिपचिपे बाल क्यों होते हैं?
मोंटू : मैं नहीं जानता.
चिंटू : क्योंकि वे हनीकोंब यानी शहद के छत्तों का इस्तेमाल करती हैं.

के वेंकट कृष्णा, 11 वर्ष

टीचर (छात्र से) : क्या तुम ने मैथ्स का होमवर्क पूरा कर लिया?
छात्र : नहीं, मेरे पास पहले से ही अपनी बहुत सी प्रौब्लम्स हैं.

चेष्टा डागर, 11 वर्ष, नई दिल्ली

रैफ्री (राहुल से) : 1, 2, 3, गो... राहुल, तुम क्यों नहीं दौड़े, जबकि मैं ने कहा, गो?
राहुल : सर, आप ने कहा, 1, 2, 3, गो... लेकिन मैं तो चौथा यानी फोर्थ खिलाड़ी हूं.

रानिशा मित्रा, 12 वर्ष, कोलकाता

टीचर (रीना से) : हाथी ढेर सारा वजन क्यों ले जा सकते हैं?
रीना : क्योंकि उन के पास एक सूंड़ होती है.

अनुराग राय, 9 वर्ष
मैंगलुरु

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

विक्की (बंटी से) : तुम टैड्डी की ओलिंपिक रेस कैसे शुरू करोगे?
बंटी : रैड्डी, टैड्डी गो.

श्रीनिधि लोकरे, 8 वर्ष
महाराष्ट्र

किट्टू (मीशू से) : मैं ने एक किताब देखी, जिस पर लिखा था, 'अपनी 50 प्रतिशत प्रौब्लम्स कैसे हल करें.' इसलिए मैं ने अपनी सारी प्रौब्लम्स हल करने के लिए दो किताबें खरीद लीं.
मीशू : तुम्हें एक किताब खरीदनी चाहिए थी और उसे दो बार पढ़ना चाहिए था.

कबीर चोपड़ा, 13 वर्ष
नई दिल्ली

टीचर (छात्र से) : तुम्हारी किताबें कहां हैं, अभिजीत?
छात्र : घर पर हैं, मैम.
टीचर : घर पर किताबें क्या कर रही हैं?
छात्र : मेरे से ज्यादा वे मजे कर रही हैं.

श्रीनिवास रामानुजम, 6 वर्ष
चैन्नई

कोमल (विमल से) : रिवर यानी नदी अमीर क्यों होती है?
विमल : क्योंकि इस के दो बैंक होते हैं.

रिशिता डी चौधरी, 8 वर्ष
मुंबई

आदमी (एक आर्टिस्ट से) : कृपया अपना एक औटोग्राफ मुझे दीजिए.
आर्टिस्ट : (एक शीट पर गधे का चित्र बनाने के बाद उसे देते हुए) : यह लो.
आदमी : ओह, यह क्या? मुझे आप का औटोग्राफ चाहिए था, फोटोग्राफ नहीं.

दिव्यांशु कुमार शौ, 13 वर्ष
पश्चिम बंगाल

बेटा (पापा से) : पापा, आप बहुत लकी हैं.
पापा : कैसे बेटा?
बेटा : (अपना रिजल्ट दिखाते हुए) : मैं फेल हो गया हूं. अब आप को मेरे लिए नई किताबें नहीं खरीदनी पड़ेंगी. पुरानी से ही काम चल जाएगा.

विवेकवर्धन, 12 वर्ष, मंडावली
दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और सेलिना लोमड़ी

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू सेलिना लोमड़ी के यहां काम करता था.

डमरू, अगर तुम मेरे पास काम करना चाहते हो तो तुम्हें मास्क पहनना होगा, सैनिटाइजर इस्तेमाल करना होगा और सोशल डिस्टैंसिंग का पालन करना होगा. तभी हम कोरोना वायरस को मात दे सकेंगे.

जरूर, मालकिन.

सभी चीजें दुकान पर ऊंचे दाम पर बेचना. तभी हम मुनाफा कमा सकेंगे.

लेकिन यह तो गलत होगा.

मैं ने जो कहा, सिर्फ वही करो और मुझे भाप लेने दो.

ओह, यह भाप क्या है?

मैं भाप इसलिए लेती हूं ताकि मेरा नाक और गला साफ रह सके और कोरोना वायरस से मुक्ति मिल सके.

ओह, ये बात है. ओके.

SONAL

अगले दिन

मुझे लगता है कि मेरे फोन में वायरस आ गया है. अब मैं अपने ग्राहकों से कैसे डील करूंगी? हमें औनलाइन बहुत और्डर मिलते रहे हैं और इस फोन की स्क्रीन जाम हो गई है.

चिंता न करें. मैं इसे ठीक कर दूंगा.

कुछ देर की बाद

तुम ने मेरे फोन को गरम पानी में क्यों रख दिया?

मालकिन, इसे थोड़ी सी भाप की जरूरत है ताकि वायरस बाहर निकल सके.

क्या? तुम ने मेरे फोन को बरबाद कर दिया. यह तो एक सौफ्टवेयर वायरस है, जो कोरोना वायरस की तरह नहीं है. भाग जाओ यहां से.

हाय, मेरा नया फोन, ज्यादा रुपए कमाने के बजाय मुझे अब इस मरम्मत में रुपए खर्च करने होंगे.

फोन को सुरक्षित रखने के लिए आप ने मास्क का इस्तेमाल क्यों नहीं किया?

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

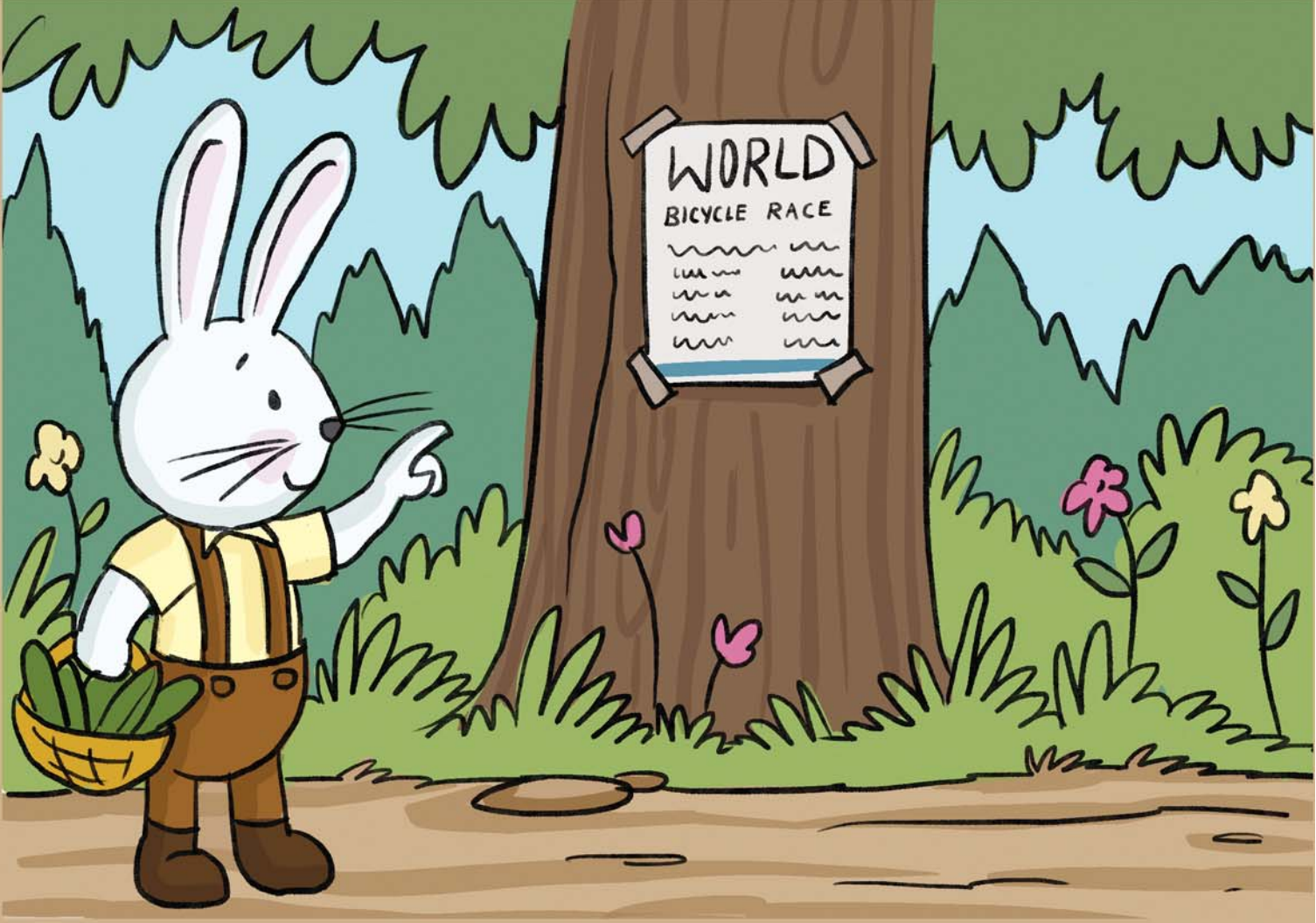

विश्व साइकिल दिवस

कहानी ● कुमार गौरव अजितेंदु

गुंपी खरगोश ताजे खीरे खरीद कर अपने घर लौट रहा था कि तभी उस की नजर पेड़ के तने पर पोस्टर लगाते एक आदमी पर पड़ी. करीब से देखने के लिए वह उस की ओर बढ़ा, लेकिन वह आदमी तब तक पोस्टर चिपका कर निकल चुका था. गुंपी पोस्टर को पढ़ने लगा. उस पर लिखा थाः

‘‘3 जून को विश्व साइकिल दिवस के मौके पर मौडल सिटी में एक साइकिल दौड़ आयोजित की जाएगी और दौड़ इस जंगल से भी गुजरेगी. सभी जीवजंतुओं से अनुरोध है कि वे रेस में भाग लेने वालों का सहयोग करें और खेल के मजे लें.’’

गुंपी यह सूचना पढ़ कर खुशी से उछल पड़ा. उस ने अपने फुदकने की गति तेज कर दी और भागता हुआ जंगल के राजा ओजू शेर के पास पहुंचा और उसे सारी बात बताई.

ओजू कुश्ती का शौकीन था. उस को अपनी कुश्ती के अलावा किसी और चीज की ज्यादा परवाह नहीं थी. वह विश्व साइकिल दिवस के बारे में अनजान था. उस ने अपने मंत्री चतुरा हिरण से पूछा, ‘‘यह विश्व साइकिल दिवस क्या होता है मंत्रीजी?’’

‘‘महाराज, इंसानों की दुनिया में पर्यावरण की सुरक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए साल 2018 से इस दिन विश्व साइकिल दिवस मनाया जाता है. मनुष्य साइकिल को परिवहन का एक सस्ता और

सुरक्षित माध्यम मानते हैं. ये भी एक कारण है इस दिवस को मनाने के पीछे,'' चतुरा हिरण ने उत्तर दिया.

''हां, मैं ने पढ़ा है साइकिलों के बारे में,'' पास बैठा ओजू का बेटा मनमौजू बोला, ''यूरोप में लोग 19वीं शताब्दी से ही साइकिल के प्रयोग का आइडिया ढूंढ़ चुके थे. 1816 में पेरिस के एक कारीगर ने सब से पहली साइकिल बनाई थी जिसे 'लकड़ी का घोड़ा' कहा जाता था.

''ठीक है,'' ओजू ने बेटे की बात बीच में काट दी. वह जानता था कि एक बार मनमोजू ने बात करना शुरू कर दिया तो करता ही रहेगा.

''मंत्रीजी, रेस देखने का आनंद हम भी लेना चाहते हैं, बताइए रेस में भाग लेने वालों की सुविधा के लिए हमें क्या व्यवस्था करनी होगी?'' उस ने पूछा.

''महाराज, मैं कुछ और सोच रहा हूं,'' चतुरा गंभीर स्वर में बोला.

''वह क्या है मंत्रीजी?''

''महाराज, पोस्टर में लिखी सूचना के अनुसार दौड़ हमारे जंगल की मीठी पगडंडी से हो कर गुजरेगी.''

''जी हां, बिलकुल सही,'' ओजू ने कहा.

''पगडंडी का नाम मीठी इसलिए है, क्योंकि उस के दोनों तरफ मीठे फलसब्जियों के पेड़पौधे हैं. वह पगडंडी काफी पतली है. शहरी इंसान अपनी साइकिल दौड़ के नाम पर वहां के कई पेड़पौधों को नुकसान पहुंचा देंगे.''

''ओह,'' ओजू भी चिंतित हो उठा. उस ने इस बारे में सोचा ही नहीं था.

''तो अब क्या किया जाए?'' उस ने चतुरा से पूछा.

''आक्रमण कीजिए महाराज,'' तभी सेनापति मुस्टंडा हाथी की रौबदार आवाज दरबार में गूंज उठी. वह हमेशा की तरह गुस्से और जोश से भरा हुआ था. उस ने कहा,'' आज्ञा दें, मैं अभी वह पोस्टर फाड़ कर फेंक देता हूं, रेस के नाम पर जो कोई हमारे जंगल को नुकसान पहुंचाने आएगा, उसे हमारी सेना कुचल देगी.''

''नहीं सेनापति,'' चतुरा ने मुस्टंडा को समझाते हुए कहा.

''इंसान भी हमारी तरह जीव हैं, हमें उन को प्यार से समझाना चाहिए.''

''लेकिन कैसे मंत्रीजी?'' ओजू ने पूछा.

गुंपी खरगोश चुपचाप खड़े हो कर सभी बातें सुन रहा था. चतुरा उस के पास गया और महाराज ओजू को प्रणाम कर के वहां से चल दिया.

अगले दिन शाम को मौडल सिटी के मेयर अपने

बरामदे में कुछ लोगों के साथ बैठे थे. अचानक क्रिकेट की एक गेंद कहीं से आई और उन की खिड़की के शीशे के बिलकुल पास से टकराई. खिड़की का शीशा टूटतेटूटते बचा. मेयर के स्टाफ ने जल्दी से गेंद को उठाया और बाहर देखा कि किस ने गेंद मारी है? तभी कुछ बच्चे वहां आए और बोले, ''अंकल, ये गेंद हमारी है, हम गली में क्रिकेट खेल रहे हैं.''

मेयर साहब हंसमुख स्वभाव के थे. कोई और होता तो अपनी मीटिंग में बाधा पहुंचाने पर गुस्सा हो जाता, लेकिन वे मुसकराते हुए उठे और बच्चों से बोले, ''बेटा, गली में क्रिकेट नहीं खेलते, लोगों के घरों को नुकसान पहुंच सकता है.''

''मेयर सर,'' तभी एक आवाज पीछे से आई. मेयर साहब ने मुड़ कर देखा तो गुंपी खरगोश अपने कुछ साथियों के साथ वहां खड़ा था. वह बोला, ''इसी तरह विश्व साइकिल दिवस के मौके पर आप जिस साइकिल दौड़ का आयोजन करा रहे हैं, वह जंगल में हमारे घरों को नुकसान पहुंचा सकती है, कई छोटे जीव बेघर हो जाएंगे.''

मेयर साहब उस की बात सुन कर हैरान रह गए. बच्चों में से एक ने कहा, ''हम गुंपी के दोस्त हैं, उस ने जब हमें साइकिल दौड़ से होने वाले नुकसान के बारे में बताया तो हम ने उस की मदद करने के लिए ही यह सारा नाटक किया था और जानबूझ कर गेंद आप के बरामदे में फेंकी. हां, हम ने इतना ध्यान रखा कि आप का कोई सामान खराब न हो.''

मेयर साहब और उन के साथ बैठे सभी लोगों को बच्चों और गुंपी की समझदारी भरी बातें सुन कर बहुत खुशी हुई. मेयर साहब ने गुंपी के सिर पर हाथ फेरा और बोले, ''हम अपनी दौड़ का रास्ता आप के जंगल से हो कर गुजारने का प्लान बदल देंगे. दौड़ तो अपने इस शहर में भी किसी और रास्ते से पूरी की जा सकती है, लेकिन पर्यावरण को सुरक्षित रखने की विश्व साइकिल दिवस की भावना सब से ऊपर है.''

गुंपी और सभी बच्चों ने खुशी से उछल कर मेयर साहब को थैंक्यू कहा और अपने घरों के लिए रवाना हो गए. ●

संख्या बताएं

3 जून को विश्व साइकिल दिवस मनाया जाता है. नीचे चित्र को देखें और साइकिलों की संख्या बताएं.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बताओ तो जानें

1. मुझ में जीवन नहीं है
फिर भी मैं मरता हूं
मुझ में होता है आवेश
गाड़ीमोटर सब के काम आता हूं.

2. मैं कभी भी प्रश्न नहीं पूछता
पर सब को उत्तर देता हूं
अगर मैं खराब हो जाऊं
तो तुम बाहर खड़े रह जाते हो.

3. मैं बड़े आकार में पैदा होती
पर ज्योंज्यों समय गुजरता
मैं छोटी होती जाती हूं
रोरो कर तुम्हें रोशनी देती हूं.

4. मैं एक बड़े से बक्से में
तुम्हारे घर के प्रांगण में
88 कालेसफेद दांत मेरे
छेड़ो तो धुन सुनाता हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. इन में से किस का सब से बड़ा भंडार भारत में है?
(क) सोना (गोल्ड)
(ख) तांबा (कौपर)
(ग) अभ्रक (माइका)
(घ) इन में से कोई नहीं

2. एक वयस्क कुत्ते के कितने दांत होते हैं?
(क) 32
(ख) 34
(ग) 38
(घ) 42

3. बास्केटबौल के खेल में हरेक पक्ष में कितने खिलाड़ी होते हैं?
(क) 4
(ख) 5
(ग) 6
(घ) 7

4. बाहरी अंतरिक्ष में जीवन की पढ़ाई को किस नाम से जाना जाता है?
(क) एक्सोबायलौजी
(ख) ऐंडबायलौजी
(ग) ऐंटरबायलौजी
(घ) नियोबायलौजी

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–बैटरी, 2–दरवाजा, 3–मोमबत्ती, 4–पियानो.
उत्तर (देखें तुम कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–घ, 3–ख, 4–क.

दूसरे ग्रह का हीरो

कहानी ● डा. के. रानी

शनिवार का दिन था. सान्या अपने पापा का औफिस से आने का बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रही थी. शाम को 6 बजे पापा घर आए. घर में घुसते ही सान्या बोली, ‘‘पापा, याद है, आप ने आज मुझे समुद्रतट पर ले जाने का वादा किया था.’’

‘‘याद तो है बेटा, लेकिन आज मैं बहुत थक गया हूं. आज औफिस में बहुत काम था,’’ पापा ने जवाब दिया.

‘‘प्लीज पापा, मेरी खातिर चलिए. मैं आप का कब से इंतजार कर रही थी. एक यही दिन तो होता है जब मैं आप के साथ समुद्र किनारे टहलने जाती हूं,’’ सान्या ने जोर दे कर कहा.

‘‘अब तो बहुत देर हो गई है बेटा,’’ पापा ने समझाने की कोशिश की.

‘‘कोई बात नहीं पापा, हम कम रोशनी में भी मस्ती कर लेंगे,’’ सान्या ने आगे कहा.

आखिर पापा उस के साथ समुद्र किनारे जाने के लिए तैयार हो गए. उन्होंने जल्दी से चायनाश्ता किया और सान्या के साथ वहां पहुंच गए. शाम ढल रही थी. अब समुद्र किनारे की चहलपहल कम होने लगी और देखते ही देखते अधिकांश लोग वहां से वापस लौट गए.

सान्या पापा के साथ थोड़ी देर वहां पर टहलती रही. उसे लग रहा था पापा बहुत थक गए हैं.

वह बोली, ‘‘पापा, मैं थोड़ी देर और रेत पर दौड़ लगाना चाहती हूं. आप यहीं बैठ कर आराम कर लीजिए.’’

‘‘लेकिन बेटा, मैं आराम नहीं कर पाऊंगा, क्योंकि

मुझे तुम्हारी चिंता लगी रहेगी,'' पापा ने जवाब दिया.

''पापा, मैं ज्यादा दूर नहीं जाऊंगी. मैं आप को सामने दौड़ती हुई दिखाई दे जाऊंगी.''

साान्या के कहने पर उस के पापा वहीं बेंच पर बैठ कर आराम करने लगे. साान्या दौड़ती हुई आगे निकल गई. कुछ ही दूर जाने पर उसे आसमान से चमकती हुई बड़ी सी चीज पानी में गिरती हुई दिखाई दी. वह समझ नहीं पाई थी कि क्या हुआ था. वह समुद्र की ओर देखने लगी, जिधर वह चीज गिरी थी. वह ईश्वर को धन्यवाद दे रही थी कि अच्छा हुआ वह उस के ऊपर नहीं गिरी.

कुछ ही देर के बाद उस ने किसी को पानी में से निकल कर आसमानी रंग के कौस्ट्यूम में समुद्र किनारे चलते हुए देखा. वह साान्या की ओर बढ़ रहा था. साान्या ने उसे ध्यान से देखा. वह लगभग उसी की उम्र का था. साान्या को उस से डर नहीं लग रहा था. लेकिन जैसे ही वह करीब आया, कुछ अजूबा सा दिखा. वह सिर से ले कर पैर तक पूरा ढका हुआ था. बस, आंखों की जगह थोड़ी खुली थी और उस पर भी चश्मा लगा हुआ था. उस ने हाथ में एक माचिस की डिबिया के बराबर कुछ पकड़ रखा था. साान्या ने उस से पूछा, ''तुम कौन हो? इस समय अंधेरे में कहां से आ रहे हो?''

उस की बात पर उस ने आंखें झपकाईं, लेकिन बोला कुछ नहीं.

''क्या तुम मुझे नहीं सुन सकते?'' साान्या ने पूछा, लेकिन उस ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह हाथ में पकड़ी माचिस की डिबिया जैसी चीज को इधरउधर घुमा रहा था. जैसे ही उस ने उस वस्तु को साान्या की ओर घुमाया, उस ने पूछा, ''क्या यह कोई छोटा कैमरा है, जिस से तुम फोटो ले रहे हो?''

''इस बार भी उसे कोई उत्तर नहीं मिला तो साान्या उस के नजदीक चली गई. उस ने पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया और कहा, ''क्या तुम्हें मेरी भाषा समझ नहीं आती?''

साान्या को बिजली का झटका सा लगा, इसलिए उस ने अपना हाथ तुरंत पीछे खींच लिया. वह उस पर हाबी हो गया था. यह प्राणी विदेशी था, उस ने सोचा,

‘कहीं ऐसा न हो यह किसी दूसरे ग्रह का प्राणी हो और धरती पर कुछ खोज करने के लिए आया हो.’

यह विचार दिमाग में आते ही सान्या ने फिर पूछा, ‘‘लगता है, तुम कोई एलियन हो और दूसरे ग्रह से यहां आए हो. मैं अभी यह बात अपने पापा को बताती हूं,’’ इतना कह कर सान्या जैसे ही पलटी, एक तेज आवाज उस के कानों में आई और उस के बाद वह नीचे गिर पड़ी.

उस ने उस विचित्र प्राणी को वापस समुद्र की ओर जाते हुए देखा. आवाज इतनी तेज थी कि वह कुछ समय के लिए बहरी हो गई. उस से उठा भी नहीं जा रहा था. वह चंद मिनट तक वैसे ही पड़ी रही और खुली आंखों से उसे वापस जाते देखती रही.

कुछ ही देर में वह चमकीली चीज जो अभी कुछ देर पहले समुद्र में गिरी थी, वापस आकाश की तरफ चली गई. उस ने देखा वह एक छोटी कार जैसी थी. उस के ऊपर एक छोटी सी लाइट लगी हुई थी और वह प्राणी उस में बैठा हुआ था.

कुछ देर बाद उस की चेतना लौटी और वह पापा की ओर चल पड़ी. काफी देर से सान्या को न देख कर पापा उसी ओर बढ़ रहे थे. उन्होंने उस से पूछा, ‘‘कहां चली गई थी, सान्या?’’

‘‘पापा, अभी यहां समुद्र किनारे एक बड़ी विचित्र घटना घटी,’’ इतना कह कर उस ने उस घटना का आंखों देखा हाल पापा को सुना दिया. उस की बात सुन कर पापा हंसने लगे और बोले, ‘‘कितनी बार मना किया है कि बेटा टीवी पर उल्टेसीधे सीरियल मत देखा करो. यह सब उसी का असर है कि तुम्हें यहां समुद्रतट पर भी एलियन दिखाई दे रहा है.’’

‘‘नहीं पापा, मैं ने उस का हाथ पकड़ना चाहा तो उस से मुझे करंट भी लगा,’’ सान्या ने तर्क दिया.

‘‘अच्छा, छोड़ो इन बातों को. तुम्हारी सैर पूरी हो गई हो तो चलें वापस?’’ पापा ने पूछा.

‘‘जी पापा,’’ कह कर सान्या पापा के साथ घर आ गई.

सान्या के पापा ने घर आते ही उस की मम्मी को हिदायत दी, ‘‘रोमा, इसे अब दिन में भी सपने दिखाई देने लगे हैं. तुम इस का ध्यान रखा करो कि यह ज्यादा देर टीवी न देखा करे. उस का असर इस के दिमाग पर पड़ने लगा है,’’ सान्या के पापा ने अपनी पत्नी से कहा.

‘‘क्या हुआ?’’ रोमा ने पूछा तो पापा ने कुछ देर पहले का वाकया उसे सुना दिया.

हालांकि सान्या इस घटना को अपने दिमाग की उपज मानने को तैयार न थी. ऐसा कैसे हो सकता है कि शाम के समय खुली आंखों से कोई सपना देखने लगे. घर आ कर भी वह इसी के बारे में सोचती रही. किसी भी काम में उस का मन नहीं लग रहा था.

अगले दिन रविवार था और सान्या सुबह देर से सो

कर उठी थी. नौ बज रहे थे और पापा टीवी पर समाचार देख रहे थे.

''गुडमौर्निंग पापा,'' सान्या ने पापा की कुशलता की कामना की.

''अब कैसी हो सान्या?'' पापा ने पूछा.

''मैं ठीक हूं पापा,'' उस ने जवाब दिया. तभी टीवी पर न्यूज आने लगी, ''कल शाम इस शहर के नजदीक समुद्रतट पर एक उड़नतश्तरी को देखा गया. माना जा रहा है कि वह जरूर किसी दूसरे ग्रह से आई होगी. जब तक इस बारे में खोजबीन की जाती तब तक उड़नतश्तरी समुद्र से बहुत दूर निकल गई.''

खबर सुनते ही पापा ने एक नजर सान्या पर डाली और बोले, ''शायद तुम ठीक कह रही थी सान्या. वह कोई उड़नतश्तरी थी जो कुछ देर के लिए पानी में उतरी थी.''

''पापा, उस में एक एलियन भी था,'' सान्या ने उत्साह से कहा.

''तुम यह बात किसी से मत कहना. तुम्हारी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा और मेरी तरह तुम्हें वे बातें सुनाने लगेंगे.''

''पापा, सबकुछ इतनी जल्दी घटा था कि मुझे भी यकीन नहीं हुआ कि वह किसी दूसरे ग्रह का प्राणी था. वह यहां की फोटो ले कर तुरंत निकल गया. उस ने मेरी भी फोटो खींची थी. मुझे आशा है कि वह हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा,'' सान्या ने पापा से कहा.

''नहीं बेटा, चिंता मत करो. हमारे रहते तुम्हें कुछ नहीं हो सकता. हां, तुम दूसरे ग्रह में हीरो जरूर बन गई हो,'' उस के पापा हंसते हुए बोले.

''मैं समझी नहीं पापा,'' सान्या ने उलझन में कहा.

''बेटा, जैसे हम किसी रहस्यमयी चीज की फोटो अखबारों में देखते हैं, वैसे ही वे भी अपने सूचना तंत्र के माध्यम से तुम्हारी फोटो अपने ग्रह के वासियों को दिखा सकते हैं,'' उस के पापा ने समझाया.

''आप ठीक कहते हैं पापा, मुझे यकीन है, वे ऐसा जरूर करेंगे,'' कह कर सान्या हंस दी तो पापा भी उस के साथ हंसने लगे. दूसरे ग्रह के हीरो बनने की कल्पना मात्र से ही सान्या रोमांचित हो गई थी. ●

मजेदार विज्ञान

होम मेड पौल्युशन कैचर

अपने इलाके के पौल्युशन यानी प्रदूषण के स्तर को परखें.

आप को चाहिए :

● एक पेपर प्लेट ● एक धागा ● एक पैंसिल ● पैट्रोलियम जैली

ऐसा करें :

1. पैंसिल का इस्तेमाल करते हुए पेपर प्लेट के किनारे पर दो छेद एकदूसरे के निकट बना लें. इस में धागे को डालें और बांध दें.

2. पेपर प्लेट के एक भाग में पैट्रोलियम जैली लगा दें और इसे एक दिन के लिए दरवाजे के बाहर टांग दें.

देखें :

एक दिन के बाद आप देखेंगे कि प्लेट के उस भाग में धूल लगा पड़ा है जिस में आप ने पैट्रोलियम जैली को लगाया था, यानी यह भाग धूल से ढका है.

सोचें :

पेपर प्लेट ने इतना सारा धूल कैसे पकड़ लिया?

धूल पैट्रोलियम जैली से चिपक गया, जोकि एक अर्ध ठोस, चिपचिपी और वैक्सी यानी मोम जैसी वस्तु है. पैट्रोलियम जैली पेपर प्लेट पर एक चिपचिपी परत बनाती है और सभी धूलकणों एवं प्रदूषित चीजों को फांस लेती है. यह पेपर तक डस्ट यानी धूल को जाने नहीं देती. अगर वातावरण की हवा ढेर सारे धूलकणों से भरी हुई है, तो इस का मतलब यह प्रदूषित है. इस प्रदूषित हवा के धूलकण पैट्रोलियम जैली से चिपक जाते हैं. अगर कहीं पर प्रदूषण कम है और बहुत ज्यादा पेड़ हैं, तो पैट्रोलियम जैली से बहुत कम धूल चिपकेगी.

पता करें :

फेसमास्क किस तरह धूल, वायरस और बैक्टीरिया को रोकता है?

आजकल फेसमास्क लगाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह रोग उत्पन्न करने वाले वायरस को हमारे शरीर में प्रवेश करने से रोकता है, जोकि हमारे नाक और मुंह से प्रवेश करने के लिए तत्पर रहते हैं. हमारे इस प्रयोग वाले पैट्रोलियम जैली के जैसा ही फेसमास्क काम करता है, लेकिन यह हमारी नाक से अंदर हवा को जाने से नहीं रोकता है क्योंकि यह कपड़े जैसी वस्तु का बना होता है. अधिकतर मास्क की एक से ज्यादा परत होती हैं. ये हवा को छानने का काम करती हैं ताकि वायरस, बैक्टीरिया या धूल किसी के नाक या मुंह से शरीर में प्रवेश न कर सके. धूल के कण बैक्टीरिया और वायरस की तुलना में बड़े होते हैं, इसलिए ये आसानी से मास्क द्वारा रोक लिए जाते हैं. अंदर की परतों में भी छोटेछोटे छिद्र होते हैं, जो बैक्टीरिया को अंदर जाने नहीं देते हैं. चूंकि वायरस बहुत ही ज्यादा छोटे यानी सूक्ष्म होते हैं, इसलिए उन्हें रोकने वाली परत में खास तरह के गुण होते हैं जोकि वायरस को आकर्षित कर लेते हैं और उन्हें फांस लेते हैं. इसलिए यह जरूरी है कि अच्छा फेसमास्क पहनें ताकि आप सुरक्षित रह सकें.

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

विक्की की गलतफहमी

कहानी ● आशा शर्मा

जिस दिन से विक्की की नानी आई थी. विक्की खूब मजे कर रहा था. सब से मजे की बात तो यह हुई कि अब उसे अकेला सोना नहीं पड़ता था. रात को नानी उस के पास सोती थी और तो और हर रोज उसे मजेदार कहानियां भी सुनाती थीं.

नानी विक्की को खूब प्यार करती थीं. बस, विक्की की एक बात उन्हें अच्छी नहीं लगती थी. वह यह कि विक्की अकसर स्कूल से अपना खाने का टिफिन भरा हुआ ही वापस ले आता था. जिस दिन मां नूडल्स या फिर कोई दूसरा फास्टफूड देतीं, उस दिन वह टिफिन खाली कर लेता था.

आज संडे था. नानी ने विक्की के साथ घूमने का कार्यक्रम बनाया. सुबहसुबह ही दोनों तैयार हो कर घर से निकल गए. नानी के हाथ में कपड़े का एक झोला भी था. विक्की ने नानी की उंगली पकड़ रखी थी.

‘‘नानी, हम लोग कहां जा रहे हैं?’’
विक्की ने पूछा.

‘‘फल और सब्जीमंडी,’’ नानी ने कहा. सुनते ही विक्की का चेहरा उतर गया. उस ने मन ही मन सोचा, ‘हुंह, ये भी भला कोई घूमने की जगह है?’ लेकिन वह कुछ बोला नहीं. चुपचाप नानी के साथ चलता रहा. कुछ ही देर में वे सब्जीमंडी के सामने खड़े थे.

वहां दर्जनों ठेले खड़े थे. कुछ पक्की दुकानें भी थीं. कुछ लोग एक बड़े से चबूतरे पर बैठ कर भी अपनी सब्जियां बेच रहे थे. विक्की ने यह दृश्य पहली बार देखा था. लाल, हरी, सफेद, पीली, बैगनी... इतने सारे रंगों की सब्जियां और फल देख कर उस की आंखें आश्चर्य से फैल गईं.

वह हैरानी से उन स्टालों को देखता हुआ आगे बढ़ा. एक ठेले पर पके लाललाल टमाटर देख कर उस ने धीरे उन्हें सहला दिया. नानी हंस दीं.

अगले ठेले पर पतलीपतली लंबीलंबी कोई सब्जी रखी हुई थी. विक्की ने उसे हाथ में उठा लिया और खुशी से चहक उठा.

''नानी, देखो, यह तो बिलकुल मेरी उंगली जैसी दिखती है,'' विक्की ने धीरे से नानी से कहा. नानी मुसकरा दीं.

''हम, इसीलिए तो इसे लेडी फिंगर कहते हैं यानी भिंडी,'' नानी ने कहा. दोनों अब आगे गए. एक दुकान पर लाल टमाटरों के बिलकुल पास में हरीहरी पतली ककड़ी रखी थीं. उन्हें देखते ही विक्की फिर चहका.

''नानी, यह तो मां सलाद में देती हैं न?'' विक्की ने कहा.

''हां, यह ककड़ी है. इसी की तरह खीरा भी सलाद में खाया जाता है. यह देखो. ये खीरा है,'' नानी ने खीरा उठा कर उसे दिखाया. विक्की ने प्यार से खीरे के ढेर पर हाथ फिराया. तभी उस का हाथ एक खुरदरी सब्जी से टकराया.

उस ने घबरा कर अपना हाथ पीछे खींच लिया.

''क्या हुआ?'' नानी ने उसे दूर जाते हुए देखा.

''नानी, यह इतनी बदसूरत सब्जी कौन सी है?'' विक्की ने पूछा.

''यह करेला है, इस की शक्ल पर मत जाओ. यह बहुत गुणकारी सब्जी होती है,'' नानी ने उसे प्यार से समझाया. विक्की ने नानी की बात पर भरोसा कर लिया. नानी ने आधा किलो करेले खरीद लिए.

इस के बाद दोनों ने कुछ फल भी खरीदे और दोनों घर वापस आ गए. वापसी में विक्की उदास नहीं बल्कि खुश दिखाई दे रहा था. आज उस ने इतनी अनोखी जगह जो देखी थी.

घर पहुंच कर मां ने सभी सब्जियां और फल धो कर उन्हें एक टोकरी में सूखने के लिए रख दिया. विक्की की नजरें अभी भी करेले पर ही टिकी हुई थीं. उस ने एक करेला उठाया और अपने दांतों से उस का एक टुकड़ा काट लिया.

‘‘थूथू कितना कड़वा है,’’ कहते हुए उस ने तुरंत मुंह में लिया टुकड़ा डस्टबिन में थूक दिया और कुल्ला करने लगा. मां ने उसे देखा तो हंसने लगीं.

‘‘विकी, करेला बहुत कड़वा होता है, इसे कच्चा नहीं खाते,’’ मां बोलीं.

‘‘एक तो देखने में इतना बदसूरत, दूसरे खाने में भी कड़वा. पता नहीं ऐसी सब्जी लाते ही क्यों हैं,’’ विक्की ने मुंह बिचकाते हुए कहा और खेलने चला गया.

रात को खाने की मेज पर नानी ने कहा, ‘‘विक्की, आज हम एक गेम खेलते हैं.’’

‘‘कौन सा गेम नानी?’’ विक्की ने खुश होते हुए पूछा.

‘‘देखो, आज तुम ने मंडी में इतनी सारी सब्जियां देखी थीं न? अब तुम्हें खाना खाते समय अपनी आंखें बंद करनी हैं. मैं तुम्हारे मुंह में निवाला दूंगी और तुम्हें उस के स्वाद से पहचान कर सब्जी का नाम बताना है,’’ नानी ने उसे खेल के बारे में बताया. विक्की तुरंत राजी हो गया.

‘‘हां, तो इस सब्जी का नाम बताओ?’’ नानी ने सब्जी का एक कौर विक्की के मुंह में डाला.

‘‘भिंडी है,’’ विक्की ने तुरंत कहा.

‘‘बिलकुल सही, अब यह बताओ,’’ नानी ने फिर पूछा.

‘‘यह टमाटर है, आप ने मुझे सलाद खिलाया है न?’’ विक्की अपनी जीत पर खुश हुआ.

''एकदम सही पकड़ा तुम ने. अब जरा इस को पहचानो तो,'' नानी ने विक्की के मुंह में दूसरा कौर डाल कर पूछा. विक्की कुछ देर तक उसे चबाता रहा, लेकिन स्वाद से वह सब्जी का नाम नहीं पहचान पाया कि कौन सी सब्जी है.

''यह कुछ खट्टा, कुछ चटपटातीखा सा... कुछ अलग सा, लेकिन बहुत टेस्टी है. समझ में नहीं आ रहा, एक कौर और खिलाओ तो,'' विक्की ने कहा. नानी ने उसे एक निवाला और खिलाया. विक्की को इस सब्जी का स्वाद तो बहुत भाया, लेकिन इस का नाम वह अब भी नहीं पहचान पा रहा था. उस ने अपनी आंखें खोल दीं.

''यह करेला है,'' नानी ने हंस कर कहा. मां भी खिलखिला रही थीं. विक्की हैरान हो रहा था.

''इतना कड़वा करेला इतना स्वादिष्ठ कैसे हो सकता है?'' उस ने हैरान हो कर पूछा.

''कच्चा करेला कड़वा होता है, लेकिन इसे छील कर, नमक लगा कर कुछ देर धूप में रखने से इस की कड़वाहट खत्म हो जाती है. इस के बाद इसे प्याज के साथ पकाया जाता है और इस में कच्चे आम या इमली की खटाई डाली जाती है, इस तरह कड़वा करेला एक बहुत ही गुणकारी और स्वादिष्ठ सब्जी में बदल जाता है.''

विक्की को अब भी उन की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था. उस ने सब्जी को ठीक से देखा और जब पूरा भरोसा हो गया कि यह कड़वा करेला ही है तो हंसतेहंसते दो निवाले और खा लिए.

नानी भी खुश थी कि करेले के बारे में वह विक्की की गलतफहमी दूर कर सकी. ●

जून (प्रथम) 2021

चीकू

चित्रकथा : दास

चीकू और मीकू जब स्कूल से लौट रहे थे, तो दोनों साथ चल रहे थे.
नंदू आज फिर अनुपस्थित था.

वह अपनी पढ़ाई के प्रति ध्यान देता हुआ नहीं दिखाई देता है. मैं ने यह भी सुना है कि वह हर दिन स्कूल जाने के के लिए घर से निकलता है, लेकिन...

हां, और वह स्कूल नहीं जाता है, मैं ने भी यह बात सुनी है. मुझे हैरानी होती है कि वह करता क्या है?

अरे, वहां देखो, लगता है, नंदू पार्क में सो रहा है?

हां, तुम सही कह रहे हो. उसे देखो तो नींद में वह कुछ बड़बड़ा भी रहा है. मुझे उसे जगाने दो.

मीकू ने नंदू के चेहरे पर पानी छिड़क दिया.
आह, पानी. ऐसा लगता है कि एक डैम टूट गया है भागो.

ओहो, ऐसा लगता है कि नंदू ने एक बुरा सपना देख लिया है.
हां, इसीलिए वह अंधाधुंध भाग रहा है.

ठीक उसी समय डिंकू गधा उन की ओर ही आ रहा था. उस के सिर पर पानी का एक घड़ा था.
इस लाउंड्रीमैन ने मेरे लंबे कामों की लिस्ट में इस काम को भी जोड़ दिया है. अब मुझे पीने के पानी को भी ढोना पड़ता है. इतने सारे काम के बोझ से मेरी कमर बहुत ही दुख रही है. ऊंह, आह...

ठीक उसी समय नंदू जोकि अंधाधंध भाग रहा था, डिंकू से टकरा गया.
ओह, यह क्या है? आह.

पानी का घड़ा टुकड़ेटुकड़े हो कर बिखर गया.

आउच, मेरे सिर में चोट लग गई. पानी, पानी...बचाओ... कोई मुझे बचाओ.

तुम्हारे कारण मेरे घड़े के टुकड़ेटुकड़े हो गए.

रुको, डिंकू, वह किसी चीज के लिए सावधान नहीं है, वह अभी भी सपने में डूबा है.

सपना? इस का मतलब हुआ कि कोई डैम नहीं टूटा? अगर ऐसा है, तो ये सारा पानी कहां से आया?

जहां तक मैं जानता हूं, तुम ने मेरे घड़े को तोड़ दिया है.

हुंह, ये सब कैसे हुआ?

अगर तुम स्कूल से भागते रहोगे और अपने सपने में डूबे रहोगे, तो इस के अलावा और क्या होगा? जो अब हुआ है.

लेकिन कुछ ही क्षण पहले यह सारा पानी कहां से आया,यह तो बताओ?

मुझे यहां से भाग जाना चाहिए, इस से पहले कि उसे पता चल जाए कि उस के चेहरे पर पानी फेंकने वाला मैं ही था.

नंदू, पानी के इन सभी मामलों को अब भूल जाओ. अच्छा रहेगा, अपने घर जाओ और अपने भीगे कपड़े बदल लो... रुको, मीकू, मैं भी आ रहा हूं.

अब मैं अपने घड़े का क्या करूं? ऊं हं...

एलियनों की गुप्त यात्रा

कहानी ● मल्लिका सुकुमार

रिहाना एक आलीशान हवेली में रहती थी जिस में एक खूबसूरत बगीचा भी था. वह अपने कुत्ते डुबी के साथ शाम को बगीचे में टहलने के लिए गई. जैसा कि अन्य कुत्ते सूंघने का काम करते हैं, वैसे ही डुबी भी चारों ओर सूंघने लगा.

अचानक डुबी दौड़ा और एक पीपल के पेड़ के पास गया. रिहाना ने देखा, इस के नीचे कोई चीज चमक रही थी. यह एक बड़ा सा बहुरंगी पत्थर था. उस ने उसे उठा लिया और इस की पड़ताल की. उस के पापा एक ज्वैलर थे, इसलिए रिहाना ने सोचा, 'मैं ने इस प्रकार के पत्थरों को पहले कभी नहीं देखा है. मैं इसे पापा की दिखाऊंगी.'

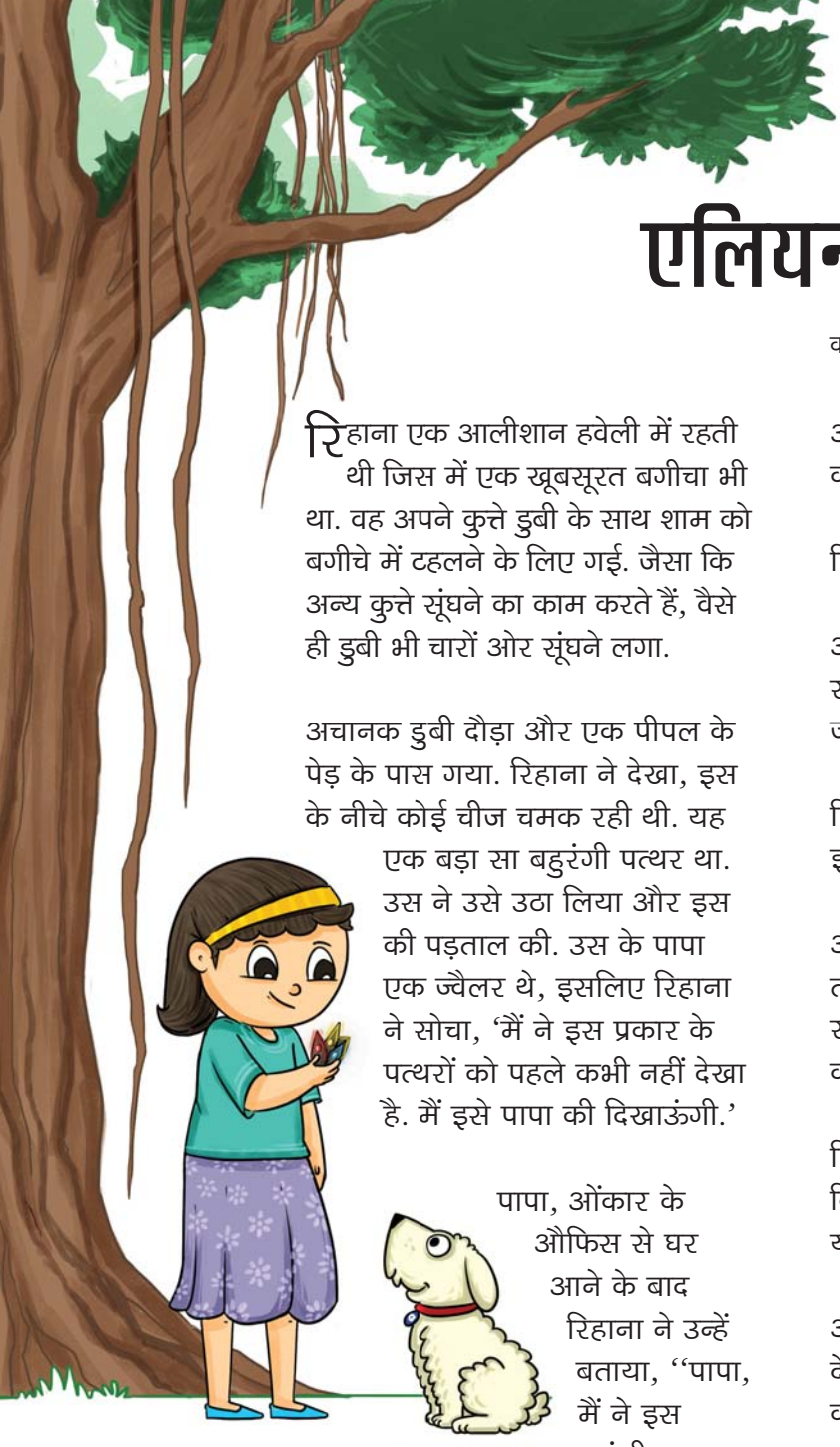

पापा, ओंकार के औफिस से घर आने के बाद रिहाना ने उन्हें बताया, ''पापा, मैं ने इस बहुरंगी पत्थर को बगीचे में पाया है.''

उस की मम्मी अरुणा भी औफिस से घर आ गई थीं. वह मुसकराई और बोलीं, ''मुझे भी दिखाओ, यह तो बहुत ही खूबसूरत है.''

ओंकार और अरुणा ने पत्थर को बड़े ध्यान से देखा. ओंकार ने कहा, ''एकदम अद्भुत. यह तो एक विलक्षण रत्न लगता है.''

अरुणा ने पूछा, ''तुम ठीकठीक बताओ, तुम ने इसे कहां पाया था? मुझे वह जगह कल सुबह दिखाना.''

रिहाना ने कहा, ''ओके.''

अगले दिन रिहाना अपने मम्मीपापा और डुबी के साथ बगीचे में गई. जहां उसे वह रत्न मिला था. उस जगह पर पहले ही दौड़ कर पहुंच चुका था.

रिहाना ने कहा, ''इस पीपल के पेड़ के नीचे ठीक इसी जगह पर कल यह रत्न मिला था,''

ओंकार ने सावधानी से आसपास की जगह को देखा ताकि पत्थर के मिलने के स्थान के बारे में कुछ और संकेत मिल सके. अरुणा पीपल के पेड़ की शाखाओं को देखने लगीं.

रिहाना ने कहा, ''मां, अब आप मुझे बताओगी न कि पेड़ ने एक विशेष रत्न को अंकुरित किया और यह जमीन पर गिर गया.''

अरुणा खामोश थीं. वे रिहाना और ओंकार की ओर देख कर इशारा करते हुए बोलीं, ''मुझे वहां की पेड़ की शाखाओं के बीच बहुत बड़ा सा कुछ चमकता हुआ दिखाई दे रहा है.''

रिहाना और ओंकार उस ओर देखने लगे जिधर उन्होंने इशारा किया था और वे हैरानी से हांफने लगे, क्योंकि वहां सचमुच में कुछ था. शाखाओं के बीच में जो चीज थी वह जमीन पर गिर गई.

रिहाना चिल्ला उठी, ''एलियन.''

एलियन की आंखें नीले रंग की थीं जो चमकीली थीं

और बिलकुल नीलमणि की तरह दिखती थीं. उस का मुंह लाल था जैसे एक लालरत्न हो. इस के सिर्फ नाक या कान नहीं थे. एलियन के दो हाथ और दो पैर थे ठीक मनुष्य की तरह और उस का पूरा शरीर पत्थर की तरह था, जिस में चमकदार बहुरंगी रत्नपत्थर जड़े हुए थे जो खास तरह से चमक रहे थे. वे चमकदार रंगों जैसे कि नीला, पीला, लाल, हरा और औरेंज के मिश्रण की तरह दिखते थे तथा वे पर्लव्हाइट यानी लालसफेद रंग के फुहारे फेंकते जान पड़ रहे थे.

रिहाना और अन्य सभी हैरान थे. रिहाना ने अपने हाथ वाले छोटे से रत्न को देखा और उस के बाद सामने पड़े पर एलियन को देखा. वह हैरानी से चीख पड़ी,'' यह बिलकुल एक समान है. यह रत्न इस के शरीर से मेल खा रहा है.''

सामने खड़ा एलियन बिलकुल शांत था. अचानक एक छोटा सा आयताकार अंतरिक्षयान आसमान से गरजता हुआ आया और धीरे से बगीचे में उतर गया.

डुबी चिल्लाने लगा, ''वूफ, वूफ, वूफ,'' वह बारबार चिल्लाया. रिहाना ने कहा, ''शांत हो जाओ, डुबी. चलो, अब इस रत्न और अंतरिक्षयान के आने के रहस्य को देखते हैं. मैं महसूस कर रही हूं कि जैसे हम एक साइंसफिक्शन मूवी देख रहे हैं यानी विज्ञान से जुड़ी एक मूवी देख रहे हैं.''

रिहाना विज्ञान की प्रशंसक थी, खास कर अंतरिक्ष की. ओंकार, अरुणा, रिहाना और डुबी अपनी धड़कती सांसों को थामे यह देखने का इंतजार कर रहे थे कि आगे कौन सा रहस्य खुलता है.

अंतरिक्षयान का दरवाजा खुला. पेड़ वाले एलियन जैसा ही एक एलियन उन की ओर बढ़ा.

रिहाना और उस के मम्मीपापा जाम सा हो गए. चौड़ी आंखों वाले डुबी ने खुद को रिहाना का साथ पा कर सुरक्षित महसूस किया.

दूसरा एलियन उन के बीच शामिल हो गया. दूसरे एलियन ने कहा, ''मैं जेमेली ग्रह का फेमि हूं. हम ग्रह पृथ्वी से अपने ग्रह में रत्नपत्थरों को अपने यान से ले कर जा रहे थे चूंकि मेरे दोस्त की पृथ्वी की पहली यात्रा थी, उस ने गलती से अंतरिक्षयान का दरवाजा खोल दिया और तुम्हारे बगीचे के पेड़ के ऊपर गिर गया. तुम्हारे हाथ में जो रत्न है, वह उस की अंगूठी है.''

पहला एलियन बोला, ''हां, मैं जेमेली ग्रह का नोवा हूं और हां, वो जो तुम्हारे हाथ में है, मेरी अंगूठी है. हमारा शरीर और हमारा सभी सामान पृथ्वी पर पाए जाने वाले सब से कीमती रत्नों से बनाया जाता है. हमें अपने भविष्य की पीढ़ियों को बनाने के लिए उन की जरूरत होती है.''

हैरानपरेशान रिहाना ने कहा, ‘‘एलियन, तुम्हारे ग्रह के बारे में तो कभी भी नहीं सुना. तुम अपने भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारे ग्रह पृथ्वी से रत्नपत्थर लेते हो, यह भी नहीं सुना.’’

ओंकार ने कहा, ‘‘क्यों, तुम्हें हमारी पृथ्वी से इन की जरूरत पड़ती है? तुम अपने शरीर को इस के बिना क्यों नहीं बना सकते?’’

एलियन फेमि ने कहा, ‘‘नहीं, हमें अपने शरीर को बनाने के लिए रत्नों की जरूरत होती है. हम तुम्हारी तरह रक्त और मांस से नहीं बनते हैं, तुम्हारा ग्रह पृथ्वी खनिज पदार्थों और रत्न पत्थरों के मामले में बहुत अमीर है. यहां पर बहुत सारे रत्न छिपे हुए हैं.’’

अरुणा ने कहा, ‘‘कितनी चौंकाने वाली बात है. क्या होगा, अगर हमारी पृथ्वी के संसाधन घटते रहेंगे, क्योंकि आप इस के रत्न ले जाते रहेंगे? इस के बारे में भी सोचना है कि आप अंगरेजी बोल कैसे सकते हैं?’’

एलियन नोवा ने जवाब दिया, ‘‘तुम सभी बहुत सी कृत्रिम चीजें बनाने में लगे हो जैसे रोबोट और यहां तक आर्टिफिशियल इंटैलिजेंस भी बना रहे हो. इसलिए कृत्रिम यानी आर्टिफिशियल रत्नपत्थर बनाना बहुत आसान है, तुम्हें चाहिए कि इस पर भी काम करो.’’

एलियन फेमि ने कहा, ‘‘हम पृथ्वी पर कोई भी भाषा बोल सकते हैं. हमारा रत्नों वाला मस्तिष्क बहुत ही ज्यादा बुद्धिमान है. हमारा दिमाग खास तरह की इलैक्ट्रौनिक्स चिप्स से बना होता है, जो किसी भी सिद्धांत या भाषा को समझ सकता है और जवाब दे सकता है.’’

वे तीनों हैरान थे. डुबी बोला, ‘‘वूफ, वूफ, वूफ.’’ रिहाना गुस्से में थी. वह बोली, ‘‘आर्टिफिशियल रत्नपत्थर असली रत्नों को किसी भी हाल में रिप्लेस नहीं कर सकते यानी उन का स्थान नहीं ले सकते हैं. तुम इन सब रत्नों को हमारे ग्रह से ले जाने का काम कब से कर रहे हो?’’

एलियन फेमि ने कहा, ‘‘बीते 5 साल से हम ने अपने कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हुए अति आधुनिक और उन्नत उपकरणों एवं उपग्रह चित्रों से पृथ्वी पर खनिज पदार्थों और रत्न पत्थरों की खोज की.’’

हैरानपरेशान रिहाना ने कहा, ‘‘तुम्हारे पास कंप्यूटर भी है?’’

ओंकार ने पूछा, ‘‘तुम कौन से रत्नपत्थरों के बारे में बात कर रहे हो? हमारे पास तो बहुत सारे रत्नपत्थर हैं, जैसे अमोलाइट, दूधिया पत्थर, माणिक, मोती, गहरा लाल पत्थर, पन्ना, नीलम, पेरिडौट, गोमेद, पुखराज, हीरा आदि.’’

एलियन हंस पड़े. एलियन नोवा ने कहा, ‘‘वह सब, हां और उन में से एक बहुत ही खास है. वह है बहुरंगी और उस में हीरे की चमक है, हरे पन्ने का रंग है, पीला नीलम, लाल माणिक, सफेद मोती, नीला पुखराज सभी इस में मिले हुए हैं. आप पृथ्वीवासी इस के बारे में मूर्ख बने रहे हैं, इस पर ध्यान नहीं दिया. हम एलियंस इसे कई टन उठा ले गए हैं.’’

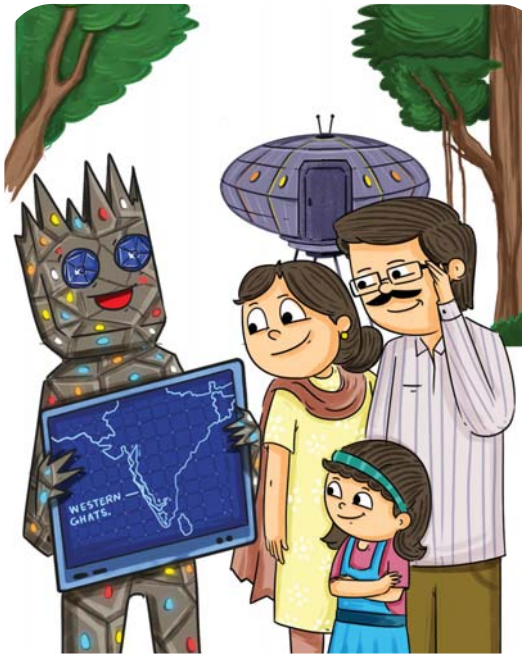

ओंकार और अन्य सभी को यह सुन कर जोरदार झटका लगा. अरुणा ने कहा, ‘‘क्या तुम रिहाना के हाथ में जो रत्न है उस के बारे में बोल रहे हो?’’

एलियन फेमि ने कहा, ‘‘हां, हमारा शरीर इसी रत्न से बना हुआ है.’’

रिहाना ने कहा, ‘‘कृपा कर कोई और स्रोत या ग्रह अपने भविष्य की पीढ़ियों को बनाने के लिए ढूंढ़ लो. अगर आप का पत्थर ले जाने का यह तरीका इसी तरह जारी रहा तो हमारी पृथ्वी के संसाधन समाप्त हो जाएंगे. आप से अनुरोध है, अब आगे ऐसा न करें.’’

एलियन दोस्ताना स्वभाव के थे. एलियन नोवा ने कहा, ‘‘ऐसा तभी होगा अगर तुम वादा करो कि तुम हमारे बारे में अपने वैज्ञानिकों को कुछ नहीं बताओगे और अन्य किसी व्यक्ति को जानकारी नहीं दोगे. हमारा ग्रह पृथ्वी से बहुत दूर है, एक भिन्न आकाशगंगा में.’’

रिहाना ने कहा, ‘‘ओके. कृपया हमें बताओ, यह रत्नपत्थर तुम्हें कहां मिला था?’’

एलियन फेमि ने मानचित्र में वह स्थान दिखाया जोकि भारत के पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच कहीं पर था. रिहाना ने इस जानकारी के लिए एलियनों का धन्यवाद दिया.

रिहाना ने इस के बाद बहुरंगी रत्न अंगूठी एलियन नोवा को दे दी. उस के बाद एलियन नोवा और फेमि अपने अंतरिक्षयान में सवार हो गए. जाते समय उन्होंने कहा, ‘‘तुम धरतीवासी बहुत अच्छे हो. हमें तुम्हारी कमी खलेगी.’’

बाद में रिहाना ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग को फोन किया और उन्हें सबकुछ बताया कि कैसे उन्हें यह रत्नपत्थर पश्चिमी घाट की सैर के दौरान अचानक मिल गया था.

जल्दी ही पुरातत्त्व विभाग वालों ने इस मामले पर अपनी खोजबीन शुरू कर दी. महीनों की खोजबीन के बाद उन्हें इस बहुरंगी चमकदार रंगों वाले कीमती पत्थर को पश्चिमी घाट के गहरे पहाड़ी क्षेत्र में ढूंढ़ने में सफलता मिली. इस के स्रोत का पता चला.

जल्दी ही यह खबर सभी समाचारपत्रों में छपने लगी. अखबारों की हेडलाइन इस प्रकार थीं, ‘हीरे से भी अत्यधिक कीमती,’ एक दूसरे अखबार ने छापा, कोहिनूर रत्नों के बीच में,’ इसी तरह से अन्य ने भी बहुत कुछ छापा.

नए रत्नपत्थर का नाम इंडिओम रखा गया क्योंकि यह सब से पहले इंडिया यानी भारत में पाया गया था.

रिहाना और उस का परिवार बहुत खुश था, क्योंकि वे एलियंस के आगमन और प्रस्थान को गुप्त रखने में सफल रहे थे. ●

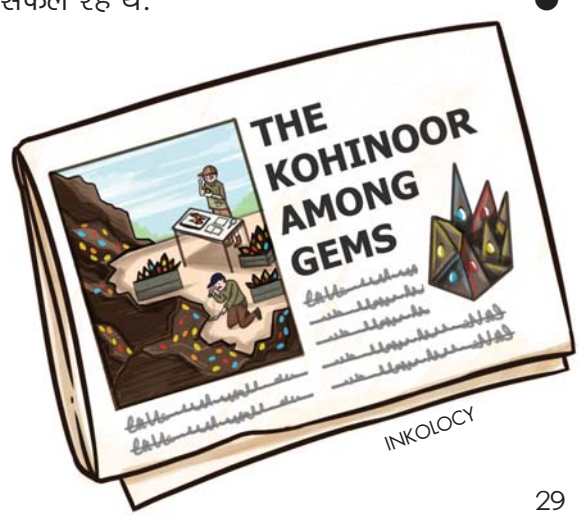

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

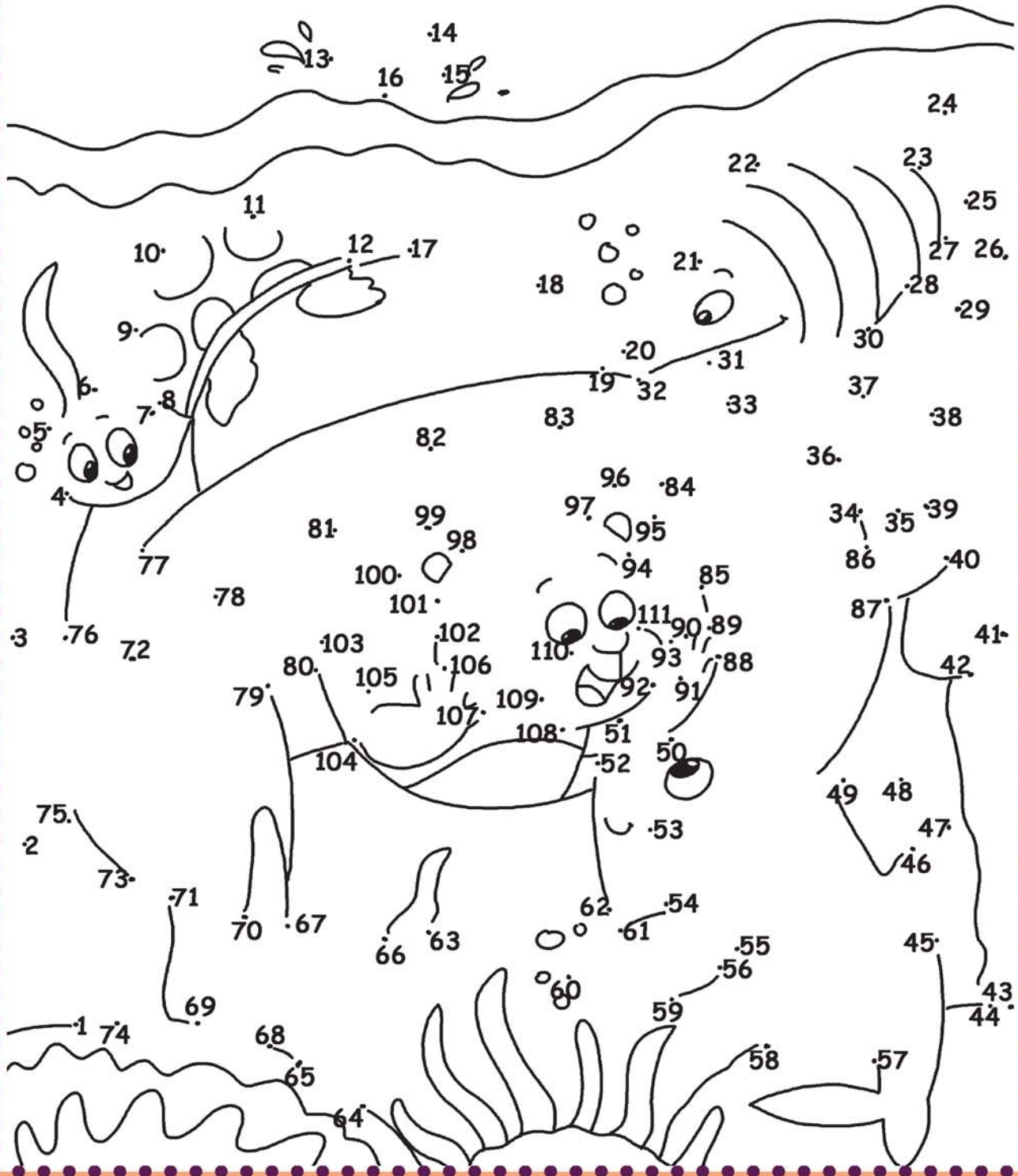

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

कौन सी किताब नहीं पढ़ी

कृपा, मीता, लक्ष और कृष ने सिर्फ एक किताब को छोड़ कर लाइब्रेरी की सारी किताबें पढ़ लीं. कौन सी किताब उन्होंने नहीं पढ़ी, यह जानने के लिए संकेतों का सहारा लें और पता करें.

1. समुद्री जीवों वाली सभी किताबों को उन्होंने पढ़ लिया.
2. नामों वाली सभी किताबें उन के द्वारा पढ़ ली गईं.
3. पहले, तीसरे और चौथे सैल्फ वाली सभी किताबें उन्होंने पढ़ लीं.
4. क्राफ्ट की सारी किताबें पढ़ ली गईं.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

पवन चक्की

पलक शाह

स्मार्ट

एक कप का इस्तेमाल करते हुए एक आसान सी पवन चक्की बनाएं.

आप को चाहिए : पेपर कप, कैंची, रंग, स्ट्रा, सतायस्टिक.

ऐसे बनाएं :

1. एक पैन का इस्तेमाल करें और पेपर कप को 8 बराबर भागों में विभाजित कर दें. 8 पंख प्राप्त करने के लिए उसे काट लें.

2. हरेक पट्टियों यानी स्ट्रीप को रंग कर पैटर्न बना लें.

3. पंख के किनारों को ट्रीम यानी छंटाई कर लें.

आप का विंडमिल यानी पवन चक्की अब बन कर तैयार है.

4. पंखे यानी चक्की के बीच में एक छेद बना लें. इस छेद में सतायस्टिक को डाल दें.

5. पीछे की तरफ सतायस्टिक के साथ स्ट्रा लगा दें. सही जगह पर इसे थामे रखने के लिए टेप का इस्तेमाल करें.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

लंबी पूंछ

कहानी ● वंदना गुप्ता

‘‘ओह, लंबी पूंछ, अपनी पूंछ यहां से हटाओ. यह मेरी कौपी पर आ रही है और मैं लिख नहीं पा रहा हूं,’’ लोबो लंगूर के पीछे बैठा सीरू सियार बोला.

‘‘मेरा नाम लोबो है, तुम मुझे लंबी पूंछ क्यों कहते हो?’’ लोबो नाराज हो कर बोला.

‘‘तुम्हारी इतनी लंबी पूंछ है तो तुम्हें लंबी पूंछ ही कहूंगा न,’’ सीरू बोला.

तभी टीचर कक्षा में आ गई और लोबो ने उन से सीरू की शिकायत की.

टीचर के डांटने पर सीरू बोला, ‘‘मैम, इस की लंबी पूंछ कभी मेरे टिफिन में घुसती है तो कभी किताबों में, कृपया मेरी सीट बदल दीजिए.’’

‘‘हम में से कोई भी इस के पीछे नहीं बैठना चाहता,’’ पूरी क्लास के बच्चे एकसाथ चिल्लाए.

‘‘अच्छा, जो जहां है वहीं बैठो और चुपचाप पढ़ाई करो,’’ टीचर ने सब को चुप कराया और पढ़ाना शुरू कर दिया.’’

लंच ब्रैक के दौरान सभी बच्चे खाना खा कर खेलने निकले.

किट्टी बिल्ली ने मिंकी बकरी से कहा, ‘‘चल, आज रस्सी कूदते हैं.’’

‘‘पर रस्सी तो आज मैं नहीं लाई,’’ मिंकी बोली.

‘‘तो क्या हुआ, हमारे पास लंबी पूंछ तो है न,’’ कह कर किट्टी ने लोबो की पूंछ को रस्सी की तरह घुमाना शुरू कर दिया. मिंकी उस पर कूदने लगी.

‘‘क्या कर रही हो, मुझे दर्द हो रहा है,’’ लोबो चिल्लाया. लेकिन किट्टी व मिंकी पर इस का कोई असर नहीं हुआ. दोतीन बार कूदने के बाद मिंकी का पैर लोबो की पूंछ पर पड़ गया.

‘‘आउट,’’ किट्टी खुश हो कर चिल्लाई, ‘‘अब मेरी बारी है.’’

लोबो दर्द से कराह उठा, वह कूद कर पास के पेड़ पर जा बैठा. उस की आंखों में आंसू थे.

उस दिन घर आ कर लोबो ने अपनी मां से कहा, ‘‘कल से मैं स्कूल नहीं जाऊंगा.’’

‘‘क्यों?’’ मां ने हैरानी से पूछा.

‘‘सब बच्चे मेरी लंबी पूंछ को ले कर मुझे चिढ़ाते हैं. मेरी पूंछ इतनी लंबी क्यों है? आप इसे कटवा दो, नहीं तो मैं अब घर से बाहर नहीं जाऊंगा.’’

‘‘मानती हूं बेटा, तुम्हारी पूंछ दूसरे जानवरों की तुलना में ज्यादा लंबी है, पर तुम इसे अपनी कमजोरी बनाने के बजाय अपनी ताकत क्यों नहीं बनाते?’’

‘‘वह कैसे मां?’’ लोबो ने हैरानी से पूछा.

‘‘तुम इस से कुछ ऐसा अनोखा काम करो, जो और जानवर नहीं कर सकते.’’

‘‘ये हर जगह अटक जाती है, मैं इस के साथ साधारण काम तो कर नहीं सकता. अनोखा क्या करूंगा,’’ लोबो अपनी पूंछ से बहुत नाराज था.

उस दिन से लोबो ने स्कूल जाना बंद कर दिया. अब वह सारा दिन इधरउधर भटकता रहता था. एक दिन वह नदी किनारे बैठा था.

तभी उसे डोलो बतख के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, ‘‘रुक जाओ बच्चो, नदी में काफी पानी है, बहाव भी तेज है, अभी तुम बहुत छोटे हो, ठीक से तैरना नहीं जानते, बह जाओगे.’’

उस के 4 चूजे तेजी से नदी की तरफ बढ़ रहे थे. उन पर तो आज पानी में तैरने का भूत सवार था. पास ही लोबो बैठा था. उस ने देखा डोलो चूजों तक नहीं पहुंच पाएगी. चूजे पानी में जाने ही वाले थे.

लोबो ने तेजी से अपनी लंबी पूंछ पानी में डाली व बच्चों को बीच में ही रोक दिया. उस ने चारों बच्चों को उस में लपेट कर किनारे की तरफ खींच लिया.

तब तक डोलो भी वहां पहुंच गई और उस ने बच्चों को अपने पंखों के नीचे ढंक लिया,’’ तुम्हारा बहुतबहुत धन्यवाद लोबो, आज तुम्हारी इस लंबी पूंछ के कारण मेरे बच्चों की जान बची है वरना ये आज नदी के तेज बहाव में बह जाते,’’ वह लोबो से कृतज्ञतापूर्वक बोली.

अभी तक तो लोबो को अपनी पूंछ के कारण ताने सुनने को मिलते थे, उस की हंसी उड़ाई जाती थी, आज पहली बार उसे तारीफ सुनने को मिली, तो वह बहुत खुश हुआ. खुशी से झूमताइतराता वह अपने घर के पास एक पेड़ की डाली पर आ कर बैठ गया और उस ने अपनी लंबी पूंछ नीचे लटका दी. आज वह अपनी पूंछ पर शर्मिंदा नहीं बल्कि गर्व महसूस कर रहा था.

तभी पड़ोस में रहने वाली चुन्नो गिलहरी के बच्चों के रोने की आवाज सुनाई दी. वे अपनी मां से झूला झुलाने की जिद कर रहे थे.

‘‘मैं कहां से लाऊं तुम्हारे लिए झूला, मुझे काम निबटाने दो,’’ चुन्नो परेशान थी, पर बच्चे थे कि झूले की जिद पकड़ बैठे थे.

‘‘आओ बच्चो, मैं झुलाता हूं तुम्हें झूला. तुम मेरी

पूंछ पकड़ कर लटक जाओ,'' लोबो अपनी पूंछ हिलाता हुआ बोला.

लोबो मन ही मन मां की कही बात याद कर रहा था, ''अपनी लंबी पूंछ का लाभ उठा कर अनोखे काम करो.''

चुन्नो के बच्चों ने लोबो की लंबी पूंछ पकड़ ली और लोबो ने उसे इधर से उधर हिलाना शुरू कर दिया. पहले तो बच्चों को बहुत मजा आया पर जल्दी ही उन के हाथ से पूंछ छूट गई और वे फिर रोने लगे.

लोबो को लगा, 'इस तरह तो बच्चों को चोट भी लग सकती है,' फिर उस ने एक उपाय सोचा. उस ने एक छोटी सी टोकरी अपनी पूंछ में बांध ली और उस में बच्चों को बिठा लिया. अब बच्चे खुश थे.

अब तो रोज यही होने लगा. लोबो अपनी पूंछ में टोकरी बांध कर बच्चों को झूला झुलाने लगा.

केवल चुन्नो के ही नहीं और जानवरों के बच्चे भी आने लगे.

सब बच्चों की मां बहुत खुश थीं. वे बोलीं, ''लोबो, तुम्हारी पूंछ तो बहुत काम की है, तुम चाहो तो बदले में पैसे ले लिया करो पर बच्चों को रोज शाम को झूला झुला दिया करो,'' पूंछ की तारीफ सुन कर लोबो को बहुत अच्छा लगा.

एक दिन एक भालू का बच्चा भूरा भी झूला झूलने की जिद करने लगा, पर वह बड़ा था इसलिए टोकरी में नहीं आ पा रहा था. उस का वजन भी और बच्चों से ज्यादा था, उस के बैठने से टोकरी टूट भी सकती थी.

तब लोबो ने एक और तिकड़म लगाई, उस ने टोकरी हटा कर अपनी पूंछ को डाली में अटका दिया और भूरा को गोद में ले कर खुद नीचे झूलने लगा. इस तरह उस ने भूरा को अपनी गोद में ले कर झूला झुलाया.

उस दिन घर आ कर लोबो बहुत खुश था. उस ने अपनी मां से कहा, ''मां, मैं ने तय कर लिया है अब मैं यही काम करूंगा, पूंछ के जरिए झूला भी

झुलाऊंगा और साथ में कई तरह की कलाबाजी खा कर बहुत से नए खेल दिखाऊंगा और इस के लिए मैं उन से रुपए लूंगा,''

''यह तो ठीक है बेटा, पर जब तुम्हारा काम चलने लगेगा, आमदनी बढ़ेगी तो हिसाबकिताब कैसे करोगे, स्कूल जाना तो तुम ने बंद कर दिया है. किसी भी काम को करने के लिए पढ़नालिखना बहुत जरूरी होता है, जो पढ़ेलिखे होते हैं वे हर काम समझदारी से, बेहतर तरीके से कर पाते हैं. ये तुम्हारा पढ़ाई का समय है, बड़े हो जाओ तो जो भी काम पसंद हो वही करना,'' मां ने समझाया.

बात लोबो की समझ में आ गई, ''ठीक है मां, मैं कल से स्कूल जाऊंगा.''

''पर तुम कई दिन से स्कूल नहीं गए. काफी पढ़ाई हो चुकी होगी,'' मां को चिंता हुई.

''कोई बात नहीं मां, मैं मेहनत कर के सब पूरा कर लूंगा,'' अब लोबो जोश से भरा हुआ था.

''लेकिन जब बच्चे तुम्हारी पूंछ को ले कर चिढ़ाएंगे तब क्या करोगे?''

''अब मुझे पता चल चुका है मां कि मेरे पास कमाल की पूंछ है, ऐसी और किसी के पास नहीं है, इसलिए अब कोई कुछ भी कहे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,'' लोबो बोला.

अगले दिन से लोबो स्कूल जाने लगा. कुछ दिन बच्चों ने उसे चिढ़ाया पर जब लोबो पर इस का कोई फर्क नहीं पड़ा तो उन्होंने चिढ़ाना छोड़ दिया.

अब लोबो को अपनी लंबी पूंछ पर गर्व है. ●

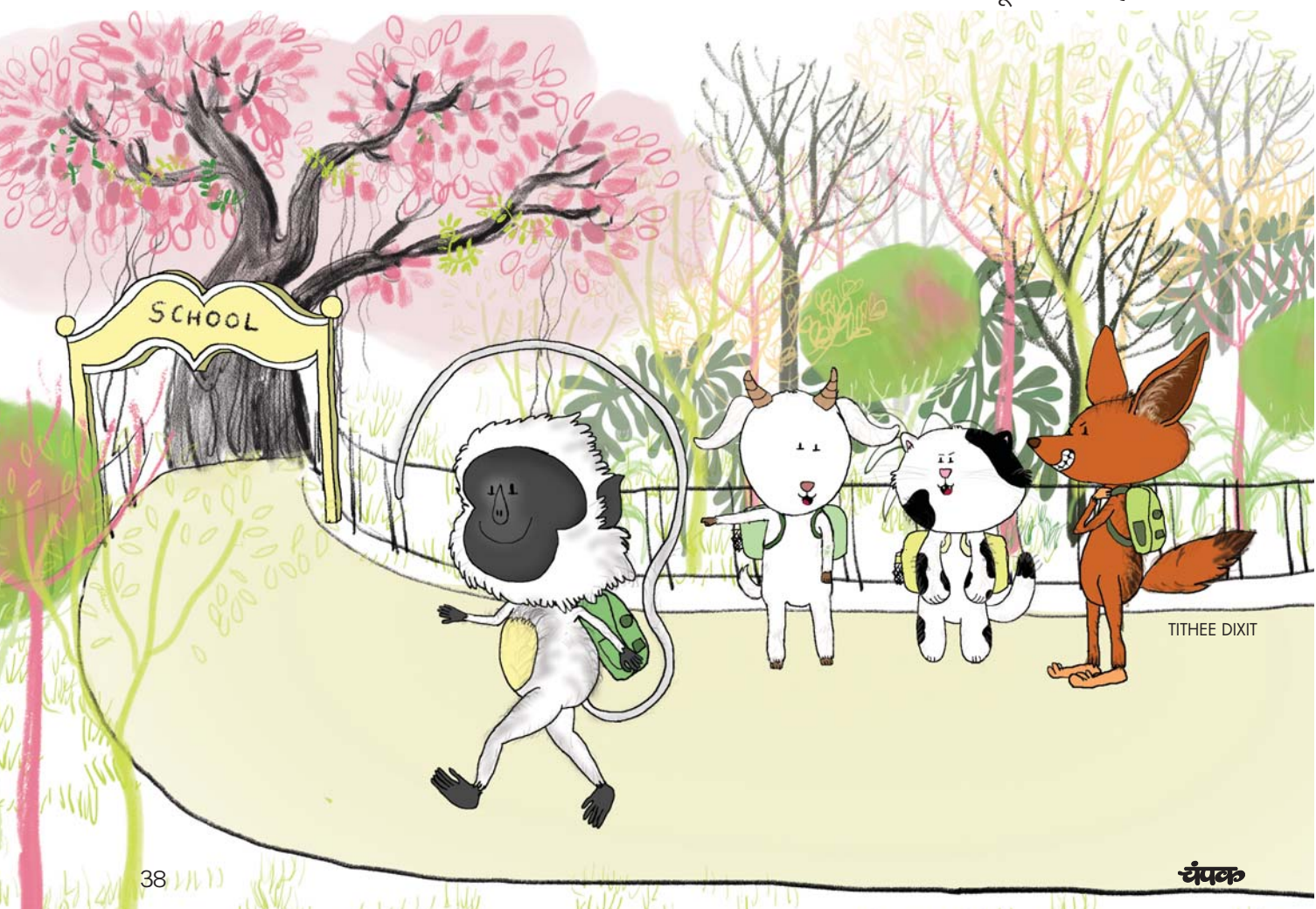

जय की मदद करें

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के लिए जय वृक्ष यानी पेड़ लगा रहा है, जिसे पानी और सूर्य की रोशनी की जरूरत होगी. यहां नीचे दिए योगफल को हल करें और पानी तथा सूर्य की रोशनी जमा करने में उस की सहायता करें.

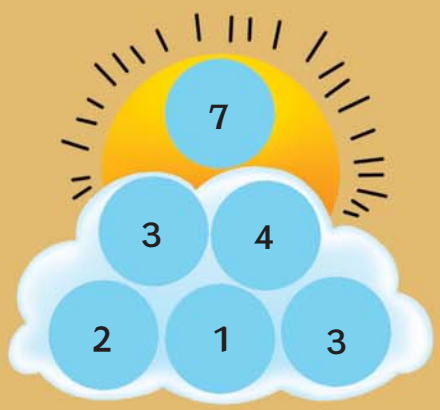

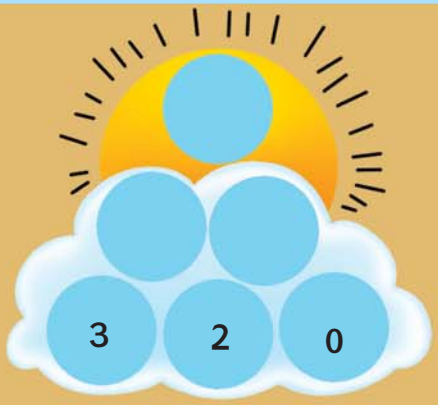

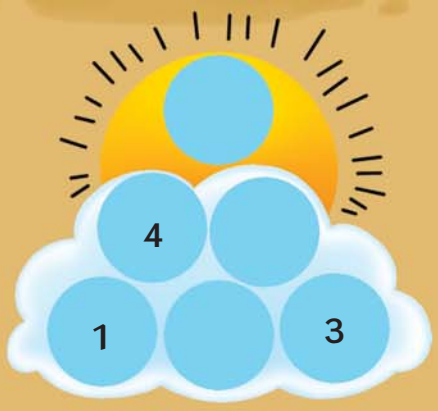

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारी और उन की जरूरतें

जिंदा रहने के लिए मनुष्य को पानी चाहिए. हम लंबे समय तक बिना पानी के नहीं रह सकते हैं. हमारे विपरीत कंगारू रैट्स यानी चूहे बिना पानी के कई साल तक रह सकते हैं, यहां तक कि जीवन भर.

कंगारू रैट्स उत्तरी अमेरिका के रेगिस्तान में पाए जाते हैं. वे 8 से 14 सेंटीमीटर लंबे होते हैं. उन का सिर बड़ा होता है, आगे के पैर छोटे और पीछे के बड़े होते हैं. उन की पूंछ की लंबाई उन के शरीर की लंबाई जितनी होती है. वे दिन भर सुरंग के अंदर रहते हैं, इसलिए इन के शरीर से ज्यादा पसीना नहीं बहता है. वे भोजन की तलाश में तभी बाहर निकलते हैं जब तापमान गिर जाता है. जैसा शाम को या फिर रात के समय में तापमान कम होता है.

कंगारू रैट्स के अन्य रैट्स यानी चूहों की तुलना में गुर्दे यानी किडनी बड़ी हाती हैं. किडनी इन के रक्त से गंदे पदार्थों को बाहर निकालने और यूरिन यानी मूत्राशय में ले जाने में मदद करती हैं. इस काम में उन की किडनियां गंदे पदार्थ से अतिरिक्त पानी को निकाल कर इन के शरीर में दोबारा वापस भेज देती हैं.

वे अपने चारों ओर उगने वाली सागसब्जियां, बीज और पत्तियों को खाते हैं. पानी जिस की जरूरत इन के शरीर को होती है, उस की पूर्ति इन के द्वारा खाए गए भोजन से हो जाती है.

कंगारू रैट्स के गालों में एक पाउच होता है जिस में से खाना जमा किया जाता है.

याददाश्त बढ़ाएं

8 जून को विश्व समुद्र दिवस है. नीचे चित्र को देखें और निम्मलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

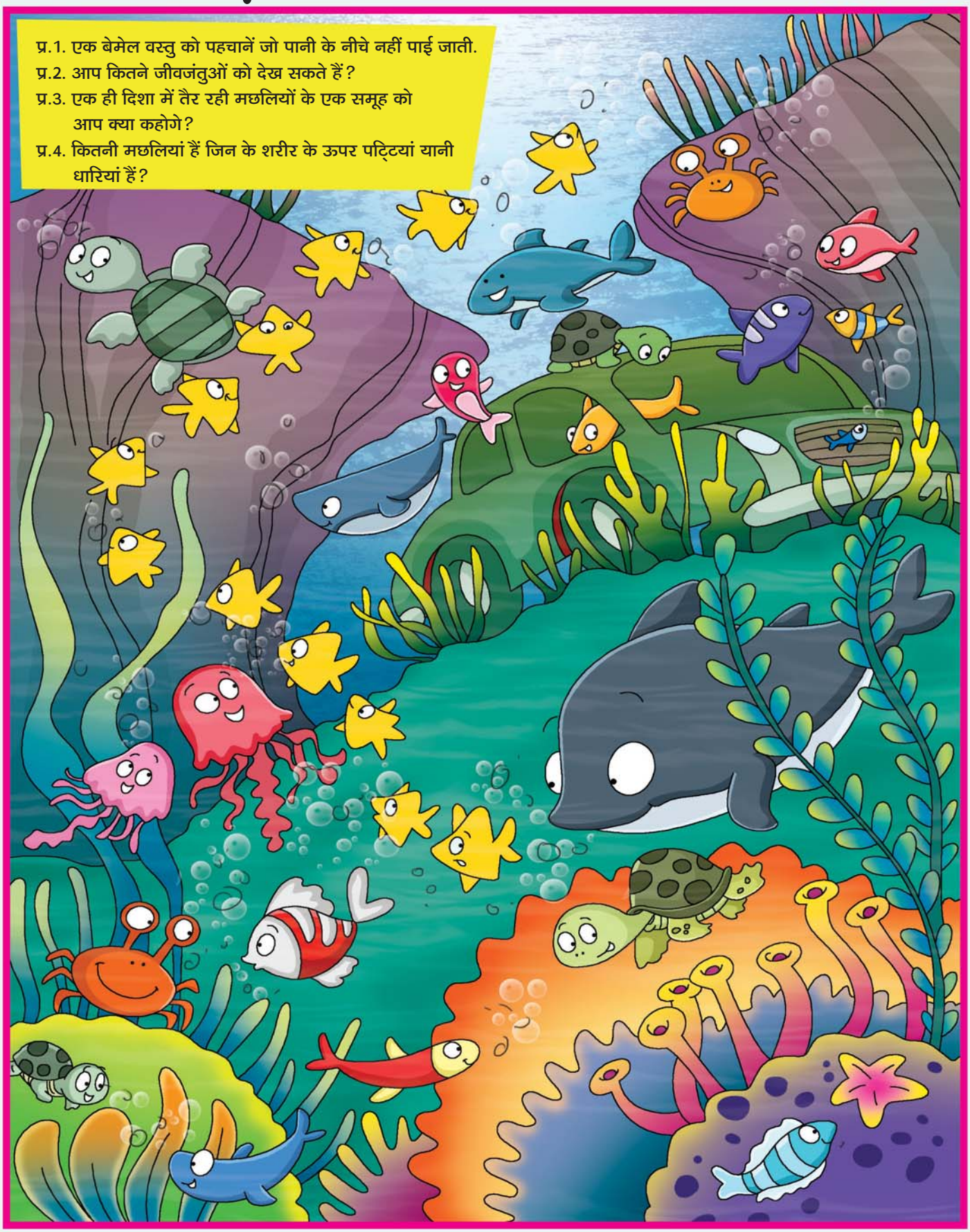

प्र.1. एक बेमेल वस्तु को पहचानें जो पानी के नीचे नहीं पाई जाती.
प्र.2. आप कितने जीवजंतुओं को देख सकते हैं?
प्र.3. एक ही दिशा में तैर रही मछलियों के एक समूह को आप क्या कहोगे?
प्र.4. कितनी मछलियां हैं जिन के शरीर के ऊपर पट्टियां यानी धारियां हैं?

दादाजी और विश्व साइकिल दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

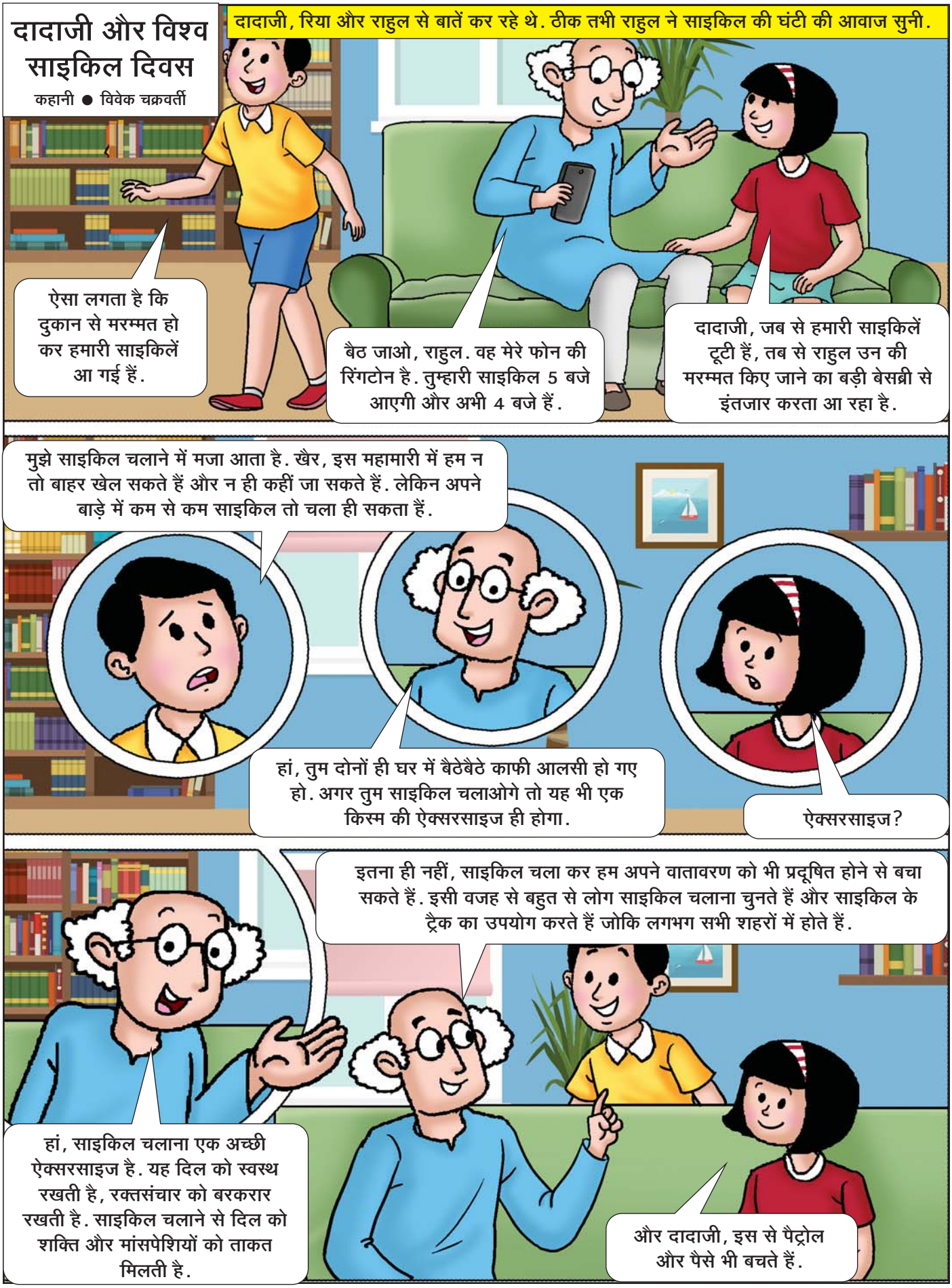

हां, और हरेक वर्ष कार ऐक्सीडैंट की संख्या भी दुखद होती है. इन्हीं वजहों से ऐम्स्टर्डम के बहुत से लोगों ने साइकिल को चलाना अपना लिया है. आज इस शहर को विश्व में साइकिल की राजधानी के नाम से जाना जाता है.
वाउ, मुझे चारों ओर साइकिल चलाने का आइडिया पसंद आ रहा है.
साइकिलें ज्यादा महंगी नहीं होती हैं और आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाती हैं. वे ट्रैफिक जाम भी नहीं होने देती हैं. जागरूकता पैदा करने के लिए 3 जून को विश्व साइकिल दिवस मनाया जाता है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग साइकिल का उपयोग करें. इस की सवारी करें.
दादाजी, मुझे लगता है कि मैं ने साइकिल की घंटी सुनी है. क्या यह फिर से आप के फोन की रिंगटोन तो नहीं?
सच में, अगर ज्यादा से ज्यादा लोग साइकिल चलाएंगे, तो प्रदूषण नहीं होगा. हर कोई स्वस्थ भी रह सकेगा.
राहुल, मेरा फोन नहीं बजा है. मुझे लगता है, दुकान से मरम्मत हो कर तुम्हारी साइकिल आ गई है.
हुर्रे.
SONAL

नन्ही कलम से

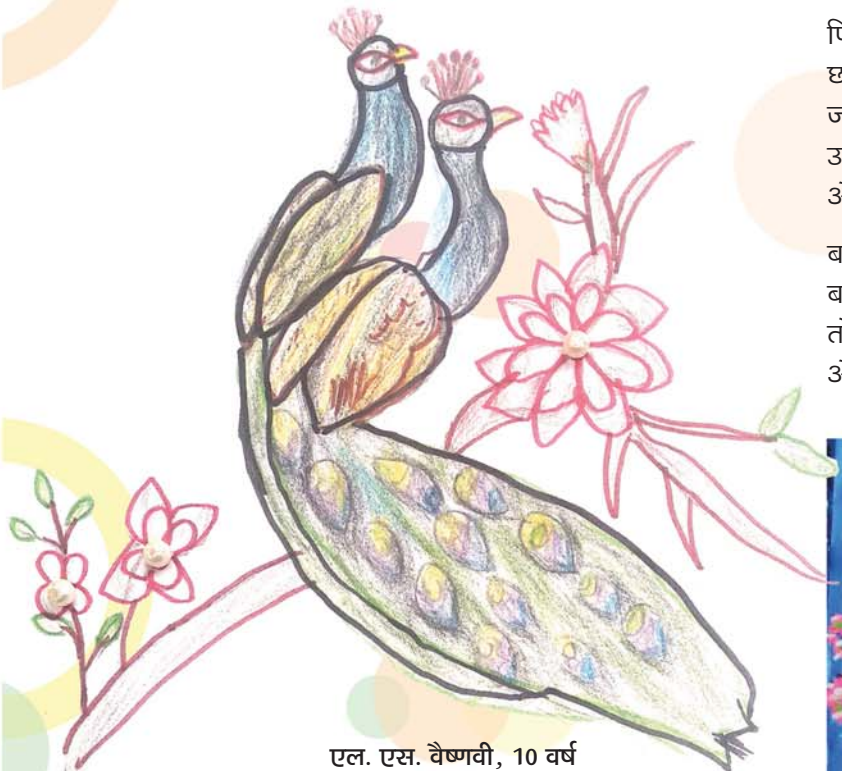

एल. एस. वैष्णवी, 10 वर्ष
चैन्नई

मानसून लौटा

वर्षा के संग वह दिन लौट आया. यह हमारे हर दिन के दुखदर्द को दूर करेगा. बारिश की जोरदार थपथपाहट किसानों को उन की फसल और अनाज उगाने में मदद करती है. एक खूबसूरत इंद्रधनुष इस मौसम में निकलता है, ऐसा होने के कुछ वैज्ञानिक कारण हैं. बच्चे कागज की नाव बनाते हैं और एक मछली की तरह उन्हें तैराते हैं. इस तरह से वे बारिश के मौसम को एंजौय करते हैं.

आर. सहाना, 11 वर्ष
चैन्नई

घर में खजाना

खेलनेदौड़ने के लिए हम जाते
पसीने में बह कर वापस हम आते.
फिर एक दिन कोविड आया
घर में बदं रहना अच्छा न लगा.

पर एक दिन मैं ने देखा
जो मैं ने न था कभी सोचा.
अब मां बनाती हैं रोज मेरा मनपसंद खाना
क्योंकि अब रोज उन्हें काम पर नहीं जाना.

फिर पापा ने बनवाया
छत पर एक बगीचा
जब हम उस की देखभाल करते
उस में फूल पौधे भी उग आते
और हम खुशी से भर जाते.

बाहर अगर न जाना
बाहर की जिंदगी का मजा न पाना
तो घर वापस आना
और देखो, रखा इतना खजाना.

बानी गुप्ता, 9 वर्ष, नई दिल्ली

मौलिक जैन, 10 वर्ष
राजस्थान

हृदयेशा शर्मा, 8 वर्ष
हरियाणा

टिपटिप टिपटिप वर्षा पानी

आसमान से वर्षा की बूंदें टिपटिप टिपटिप कर के गिरती हैं, टपटप टपटप, धड़धड़, नन्ही, नन्ही. पूरे दिन पूरी रात गिरती हैं. मुझे कागज की नाव बनाना पसंद है और इस पर अपना नाम भी मैं लिखना नहीं भूलता, इन्हें बहतीधारा में बहा देता हूं. वे बड़े सुंदर और रंगीन होते हैं. किसी न किसी को ये कहीं मिल जाएंगे. मैं तब खुशियों से भर कर चिल्लाता हूं. मैं अपने रंगीन छाता के नीचे बैठ जाता हूं, टिपटिप टिपटिप वर्षा होती है. मुझे अपने खिलौने के संग खेलना पसंद है. यह मुझे वर्षा में भीगने से बचाता है. मैं इसे खोल कर अपने ऊपर तान लेता हूं. मुझे बारिश में नाचना भी पसंद है.

हृदान पटेल, 7 वर्ष
अहमदाबाद

तन्वी कोठारी, 13 वर्ष
जयपुर

मुझे चंपक पसंद है

यह मनोरंजन का एक ट्रक है, यह सब से बढ़िया कहानियोंकी पत्रिका है और इस में अजूबी पहेलियां होती हैं जो हमें कुछ न कुछ सिखाती हैं. मैं चंपक को इस तरह की कहानियों और पहेलियों के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा. इसी तरह पहेलियां और कहानी को प्रकाशित करते रहिए और हम चंपक के पाठक के रूप में आप का समर्थन करते रहेंगे.

पुकुर संघवि, 12 वर्ष, बडौदा.

श्रेयांश ध्यानी, 6 वर्ष
देहरादून

ये सभी एगशैल टौय हैं. इन्हें हमारी 8 वर्षीय पाठिका वसुंधरा बिस्वास ने कोलकाता से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

मैं भी बनूंगा पुलिस इंस्पैक्टर

कहानी ● मुरली टीवी

जस्टिन, जैनिस, चांदनी और चार्मी एक खुशनुमा रविवार की सुबह बैडमिंटन खेलने में मस्त थे.

स्कूल लैवल बैडमिंटन टूर्नामैंट के सब जूनियर कैटेगरी में जस्टिन और चांदनी ने बहुत सारे इनाम जीते थे.

जैनिस जस्टिन की छोटी बहन थी और चांदनी और चार्मी सगी बहनें थीं. चारों एकसाथ खेला करते थे.

मैच के दौरान जस्टिन अचानक चिल्लाया, ''भागो, भागो.''

पलभर में जस्टिन और जैनिस प्लेग्राउंड से गायब हो गए. चांदनी और चार्मी भौचक्की खड़ी रही.

''उन्हें क्या हो गया?'' चांदनी ने पूछा. चार्मी के पास कोई उत्तर नहीं था.

लड़कियां अपने दोस्तों को हर जगह खोजती रहीं. ''अरे, वे यहां हैं,'' एक पेड़ के पीछे से चार्मी चीखी.

चांदनी तुरंत उस ओर भागी.

''क्या वे चली गई हैं?'' डरते हुए जस्टिन ने पूछा. जैनिस ने अभी भी अपना चेहरा हथेलियों से छिपा रखा था.

चांदनी काफी कन्फ्यूज थी, ''कौन?'' उस ने पूछा.

''पुलिस,'' जस्टिन ने कहा. उस के बाद वह धीरे से उठा और चारों ओर संदेह से देखने लगा. ''ओह, वे चले गए हैं,'' उस ने राहत की सांस ली.

जैनिस भी उठी और उस ने भी यह सुनिश्चित किया कि पुलिए चली गई है. इस से पहले कि चार्मी और चांदनी कुछ पूछ पाते, दोनों ही अपने घरों की ओर भागने लगे.

''क्या उन्होंने कहीं से कुछ चुराया है या जस्टिन ने किसी से झगड़ा किया?'' चांदनी ने पूछा.

''मैं नहीं समझता कि पुलिस उन के जैसे बच्चों को गिरफ्तार करेगी,'' चार्मी ने दृढ़ता के साथ कहा.

''लंच करने के बाद हमें उन के घर चलना चाहिए,'' चांदनी ने सुझाव दिया.

जस्टिन और जैनिस अभी लंच करने ही जा रहे थे कि तभी चांदनी और चार्मी ने उन की डोर बेल बजाई. जस्टिन की मां कैमिला ने दरवाजा खोला और कहा, ''अरे, बच्चो, आओ, हमारे साथ लंच करो.''

''धन्यवाद, लेकिन हम ने अभीअभी लंच किया है. आप लोग कर लीजिए. हम यहां, इंतजार कर लेंगे,'' चार्मी ने कहा.

''मुझे यह दालफ्राई पसंद नहीं है,'' जस्टिन ने रूठते हुए कहा.

''आप गोभीपराठा क्यों नहीं बनाती? मुझे रोटी पसंद नहीं है,'' जैनिस ने शिकायत की.

''जो बना है वही खाओ, नहीं तो मैं पुलिस बुला दूंगी,'' आंटी कैमिला ने उन्हें डांटा.

जस्टिन और जैनिस ने बिना एक भी शब्द बोले अपना लंच चट कर लिया.

''आओ, अब लुकाछिपी खेलते हैं,'' अपना खाना खाने के बाद जैनिस ने चार्मी से कहा.

''नहीं, हम बैडमिंटन खेलते हैं,'' जस्टिन ने कहा.

''तुम ने अभीअभी लंच किया है. अभी तुरंत बाहर खेलने मत जाओ,'' उस की मम्मी ने कहा. लेकिन जस्टिन और जैनिस खेलने पर आमादा थे.

अचानक उन्होंने सामने के दरवाजे को खोला और जोर से कहा, ''क्या वहां पर पुलिस है? कृपया यहां आ जाइए.''

''नहीं मम्मी, हम घर पर ही रहेंगे,'' जस्टिन और जैनिस ने डरते हुए एक स्वर में कहा. उन की मम्मी वापस फिर किचन में चली गईं.

अब तक उन की सहेली चांदनी और चार्मी समझ गई थी कि क्यों उन की सहेलियां पुलिस से इतना डरती थी. खैर वे उस समय कुछ भी कहना नहीं चाहते थे.

जब वे अपने घर आए तो चार्मी ने अपनी मम्मी को सबकुछ बताया और पूछा, ''मम्मी, इस तरह से बच्चों को डराना क्या सचमुच बुरी बात नहीं है? जस्टिन और जैनिस पुलिस से बिना मतलब के बहुत ज्यादा डरे हुए रहते हैं.''

मम्मी ने कुछ देर सोचा और जब वह कुछ कहने ही वाली थीं कि चांदनी ने कहा, ''मेरे विचार से आप को आंटी कैमिला से कहना चाहिए कि इस तरह से उन्हें न डराएं.''

''कैमिला अपने बच्चों से क्या कहती हैं, इस मामले में मैं हस्तक्षेप नहीं कर सकती,'' मम्मी ने जवाब दिया.

दोनों बहनें उन के जवाब से चिढ़ गईं, लेकिन मम्मी ने प्यार से उन की पीठ थमथपाईं और कहा, ''मेरी भावना तुम्हें चोट पहुंचाने की नहीं है. लेकिन तुम्हें अपने दोस्तों की मदद करने के लिए एक रास्ता जरूर निकालना चाहिए. अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग करने की कोशिश करो.''

''मम्मी, कृपया हमारी मदद करो,'' चांदनी ने अनुरोध करते हुए कहा.

''हां, मम्मी, प्लीज,'' चार्मी ने भी विनती की.

‘‘ठीक है, हां, तो तुम जान चुके हो कि तुम्हारे दोस्त पुलिस से क्यों डरते हैं. अब तुम उन्हें पुलिस के कार्यों के बारे में जागरूक बनाने का रास्ता ढूंढ़ो. उन्हें यह दिखाओ कि पुलिस लोगों को सिर्फ सजा ही नहीं देती है, बल्कि और भी कुछ करती है.’’

उस के बाद चांदनी और चार्मी ने मुद्दे पर बड़ी गंभीरता से चर्चा किया. इंटरनैट पर उन्होंने पुलिस के कार्यों को ढूंढ़ा. उन की भूमिका को जाना.

‘‘चलो, हम चेतन अंकल से बात करते हैं जो एक पुलिस औफिसर हैं,’’ चांदनी ने सुझाया.

‘‘यह एक बहुत अच्छा विचार है,’’ चार्मी ने राजी होते हुए कहा. उस के बाद वे दोनों इंस्पैक्टर चेतन से बात किए और एक योजना बनाई.

अगले दिन जस्टिन और जैनिस चांदनी और चार्मी से मिलने आए. ‘‘चलो, हम बैडमिंटन खेलते हैं,’’ जस्टिन ने कहा.

‘‘रुको, पहले थोड़ा स्नैक्स खा लो,’’ चांदनी की मम्मी ने कहा.

‘‘हमें भूख नहीं लगी है, आंटी,’’ जस्टिन ने कहा.

‘‘कृपया पुलिस को मत बुलाना,’’ जैनिस ने मिन्नत की. चांदनी की मम्मी ने अपना सिर हिलाया और धीरे से मुसकराईं.

‘‘हम पुलिस क्यों बुलाएंगे? अगर तुम उन्हें पसंद नहीं करते हो, तो मत खाओ. इन के बदले यहां कुछ बिस्कुट रखे हैं, खा लो,’’ चांदनी ने कहा.

‘‘पुलिस का मतलब उन बच्चों को पकड़ लेना नहीं है, जो खातपीते नहीं हैं,’’ चार्मी ने विस्तार से बताया.

ठीक उसी समय इंस्पैक्टर चेतन ने वर्दी पहन कर कमरे में प्रवेश किया. इस से पहले कि जस्टिन और जैनिस भाग पाते, चांदनी और चार्मी ने उन्हें रोक दिया और कहा, ‘‘वह हमारे अंकल हैं. वे यहां तुम्हें शाबाशी देने आए हैं.’’

इंस्पैक्टर चेतन ने जस्टिन से हाथ मिलाया, ‘‘बहुत अच्छा, मेरे बच्चे, मैं ने सुना है कि तुम बहुत बढ़िया बैडमिंटन खेलते हो और तुम ने बहुत सारे इनाम भी जीते हैं.’’

डरे हुए जस्टिन ने अपना सिर हिलाया.

‘‘तो आ जाओ, हम बैडमिंटन का एक मैच खेलते हैं,’’ इंस्पैक्टर चेतन ने सुझाव दिया.

हिचकिचाते हुए जस्टिन और जैनिस बैडमिंटन कोर्ट तक उन के पीछेपीछे गए.

कुछ ही मिनटों में इंस्पैक्टर चेतन और जस्टिन ने खेलना शुरू कर दिया.

‘‘वाउ, जस्टिन तो बहुत अच्छा खेल रहा है, चांदनी, तुम भी बढ़िया खेलती हो,’’ उन्होंने कहा. खेल कुछ देर तक चलता रहा.

‘‘इंस्पैक्टर अंकल, आप के खेल का तो कोई जवाब ही नहीं है,’’ जस्टिन खुशी से चहका. तब तक जैनिस ने भी उन का गर्मजोशी से स्वागत किया.

कुछ देर बाद जब खेल समाप्त हो गया, तो ताजे सेब का जूस हरेक के लिए तैयार था.

''अंकल, क्या आप एक गाना गा सकते हैं, प्लीज,'' चांदनी ने विनती की, वह जानती थी कि अंकल की आवाज बड़ी अच्छी थी.

''क्यों नहीं?'' इंस्पैक्टर चेतन ने कहा और सभी के लिए एक सुरीला गीत गाया.

जस्टिन और जैनिस को विश्वास ही नहीं हो रहा था. ''क्या आप बच्चों को मारते हैं?'' जस्टिन ने हिचकिचाते हुए पूछा.

''अगर हम अपना लंच न करें, तो क्या आप हमें जेल में डाल देंगे?'' जैनिस ने हकलाते हुए पूछा.

''क्या तुम ने कभी कोई अपराध किया है? क्या तुम ने कभी कोई चोरी की है?'' इंस्पैक्टर चेतन ने पूछा.

''नहीं, कभी नहीं,'' चारों ने एक स्वर में कहा.

''तब तुम्हें पुलिस से नहीं डरना चाहिए,'' इंस्पैक्टर चेतन ने कहा.

''पुलिस लोगों को अपराध से बचाती है. हम लोगों को खाना नहीं खाने की वजह से सजा नहीं देते हैं. दुर्भाग्य से कुछ पेरैंट्स अपने बच्चों को हमारे बहाने डरा कर अपनी आज्ञा का पालन कराने में आसानी महसूस करते हैं,'' इंस्पैक्टर चेतन ने विस्तार से बताया.

जस्टिन और जैनिस ने सिर्फ अपना सिर हिलाया, मैं ने देखा है कि हाल की कोरोना वायरस महामारी के समय अंकल चेतन और अन्य पुलिसमैन लोगों की मदद करने में रातदिन लगे हुए हैं,'' चांदनी ने कहा.

''अगर पुलिस नहीं होगी तो चोरों ओर बदमाशों को मौका मिल जाएगा,'' चार्मी ने कहा.

''एक अच्छी पुलिस अपराध होने से रोकती है और जन कोलाहल नहीं होने देती है. वे कानून व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करती हैं. तुम्हें खाना नहीं खाने और होमवर्क न करने के कारण पुलिस से दंडित किए जाने का डर नहीं पालना चाहिए,'' इंस्पैक्टर चेतन ने विस्तार से बताया.

कुछ देर के बाद कैमिला आंटी जैनिस और जस्टिन को लेने वहां आईं. उन्होंने वहां पुलिस औफिसर को देखा और पूछा, ''क्या हुआ?''

''चिंता मत कीजिए, आंटी. वे हमारे अंकल हैं,'' चांदनी ने कहा.

''मैं यहां जस्टिन और जैनिस से मिलने आया था. वे दोनों बैडमिंटन के बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं,'' जस्टिन की पीठ थपथपाते हुए इंस्पैक्टर चेतन ने कहा. ठीक तभी उन का फोन बज उठा और वे बोले, ''ओह, मुझे जाना पड़ेगा.''

''सौरी मैम, मेरे पास सचमुच उन बच्चों को गिरफ्तार करने के लिए समय नहीं है जो खाना नहीं खातेपीते या पढ़ते नहीं हैं,'' इंस्पैक्टर चेतन कैमिला आंटी पर मजाकिया लहजे में हंसते हुए बोले.

‘‘मैं...मैं...मेरा मतलब ऐसा बिलकुल भी नहीं था,’’ वह घबराते हुए बोलीं.

‘‘कोई बात नहीं, यह तो एक मजाक था,’’ वह बोले और वहां से चले गए.

‘‘जस्टिन और जैनिस यहां देखो,’’ चार्मी ने कहा. उस के बाद उस ने पुलिस के उन कार्यों को दिखाया जिसे पुलिस ने किया है. वे सब के सब बहुत प्रभावित हुए.

चांदनी की मम्मी ने कैमिला आंटी से धीरे से कहा, ‘‘बच्चों से उन के कार्य कराने के लिए पुलिस का इस्तेमाल करना और डराना उन के मन में गलत तसवीर को बनाता है. इस से ऐसा भी हो सकता है कि वे पुलिस से संपर्क करने से डरेंगे जब सचमुच में किसी खतरे में फंस जाएंगे अगर बच्चे कहना नहीं मानते हैं, तो हमें पौजिटिव तरीके से सोचने की जरूरत है ताकि वे कहना मानें. इस से उन के दिमाग में कभी निगैटिव आइडिया को पलने का मौका नहीं मिलेगा, खास कर डर के भाव को पनपने का.’’

‘‘आप को यह विश्वास जगाने के लिए बहुतबहुत धन्यवाद. मैं इसे आसानी से अमल में लाने की कोशिश करूंगी,’’ कैमिला आंटी ने कहा और ऐसी भूल फिर नहीं करने का वादा किया.

‘‘मैं समझता हूं कि मैं इंस्पैक्टर चेतन अंकल के जैसा ही पुलिस इंस्पैक्टर बनूंगा,’’ जस्टिन ने कहा.

‘‘मैं भी बनूंगी,’’ जैनिस ने कहा.

चांदनी और चार्मी ने उन का स्वागत करते हुए कहा, ‘‘ये हुई न काम की बात. बहुत बढ़िया.’’ अब जस्टिन और जैनिस बड़े खुश थे. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 13 : संख्या बताएं:

पृष्ठ 31 : कौन सी किताब नहीं पढ़ी:

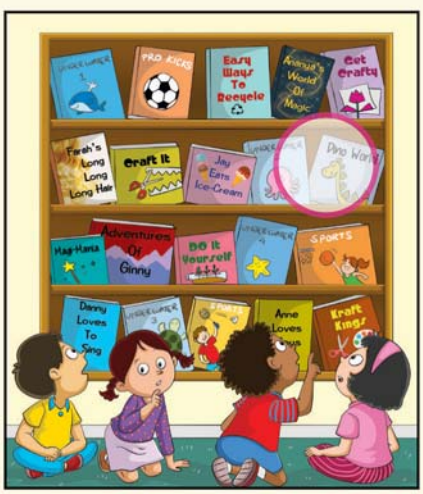

पृष्ठ 39 : जय की मदद करें :

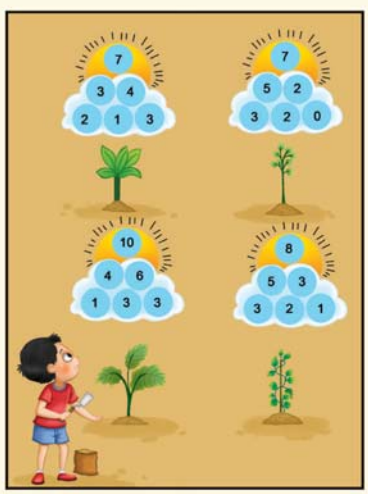

CASIO

Make Summer Fun & Exciting

Be Smart, Look Cool

WITH CASIOmini

BOOSTS Creativity & Confidence

MAKE KIDS Stronger, Sharper & Smarter

ENHANCES Communication Skills

IMPROVES Concentration

SA-46/47 32KEYS

SA-76/77/78 44KEYS

100 Tones (3/4 Indian*) | 50 Rhythms (5 Indian) | 5 Pads for percussion Sound (2 Indian) Piano, Organ, Harmonium* tone button

CTK-240 49 FULL SIZE KEYS

100 Tones and 100 Rhythms with Auto-accompaniment Melody On/Off Lesson Function | Big LCD Display 1.6W+1.6W speaker output

*Features may vary from model to model. Piano/Organ/Harmonium button is available only in SA-77 and SA-47

CASIO MONTHLY CONTEST*

Answer this simple question & stand a chance to win a Free Mini Keyboard

Q: Casio Mini Keyboards makes you _____

Ans. (A) Boring & Fool. (B) Smart & Cool.

WhatsApp 'Champak' Space 'Name' Space 'Correct Option' @ +91-8657402248

* T & C Apply., Last Date for receiving entries: 30th June 2021, Results will be announced by 10th July, 2021

Result will be announced on /CasioElectronicMusicalInstrumentsIndia in 1st week of July, 2021

FOR ONLINE WARRANTY REGISTRATION VISIT AT - support.casio.in/register

Available at: **All Leading Toy and Musical Instrument Stores**

Authorised Online Partner : casioindiashop.com

CASIO INDIA CO., PVT. LTD. A-41, First Floor, Mohan Cooperative Industrial Estate, Mathura Road, New Delhi -110044 Ph.: 011-66999200

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/05/2021. Pgs. 52